सूरतुल मुल्क-६७

سُوۡرَةُ المُلۡكِ

सूर: मुल्क* मक्का में नाज़िल हुई, इस में तीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो वड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبَٰرَكَ ٱلَّذِي بِيَدِهِ ٱلۡمُلۡكُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٌ ۝١

१. बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य (मुल्क) है और जो हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है।

ٱلَّذِي خَلَقَ ٱلۡمَوۡتَ وَٱلۡحَيَوٰةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ أَيُّكُمۡ أَحۡسَنُ عَمَلٗاۚ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡغَفُورُ ۝٢

२. जिस ने ज़िन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारा इम्तेहान ले कि तुम में से अच्छे अमल कौन करता है,[1] और वह ग़ालिब और माफ़ करने वाला है।

ٱلَّذِي خَلَقَ سَبۡعَ سَمَٰوَٰتٖ طِبَاقٗاۖ مَّا تَرَىٰ فِي خَلۡقِ ٱلرَّحۡمَٰنِ مِن تَفَٰوُتٖۖ فَٱرۡجِعِ ٱلۡبَصَرَ هَلۡ تَرَىٰ مِن فُطُورٖ ۝٣

३. जिस ने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किये (तो हे देखने वाले! अल्लाह) रहमान की पैदाइश में कोई असंगति (बेजाबतगी) न देखेगा, दोबारा पलट कर देख ले कि कि क्या कोई चीज भी दिखाई दे रही है।

---

* इस की प्रधानता (फ़ज़ीलत) में कई हदीसें आयी हैं, जिन में से कुछ सहीह या हसन हैं, एक में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह की किताब में एक सूरह है जिस में सिर्फ़ ३० आयतें हैं, यह इंसान की सिफ़ारिश करेगी यहां तक कि उसे माफ़ कर दिया जायेगा।" (तिर्मिज़ी, अबु दाऊद, इब्ने माजा और मुसनद अहमद २\२९९, ३२१) एक रिवायत अल्लामा अलबानी ने अस-सहीहा में नक़ल की है «سُورَةُ تَبَارَكَ هِيَ الْمَانِعَةُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ» "सूरह मुल्क क़ब्र के अज़ाब से रोकने वाली है।" (न॰ ११४०, भाग ३, पेज १३१) यानी जो उसे पढ़ता रहेगा उम्मीद है कि क़ब्र के अज़ाब से सुरक्षित (महफ़ूज़) रहेगा, शर्त यह है कि वह इस्लाम के हुक्म और वाजिबात (अनिवार्यताओं) का पालन करता रहे।

[1] आत्मा (रूह) एक ऐसी दिखाई न देने वाली चीज है कि जिस शरीर से उसका रिश्ता और लगाव हो जाये वह ज़िन्दा कहलाता है और जिस शरीर से उसका रिश्ता टूट जाये वह मौत से मिल जाता है। अल्लाह ने यह वक़्ती ज़िंदगी का सिलसिला इसलिए क़ायम किया है ताकि वह इम्तेहान ले कि इस ज़िन्दगी का सही इस्तेमाल कौन करता है? जो उसे ईमान और हुक्म की पैरवी के लिए इस्तेमाल करेगा उस के लिए अच्छा फल है और दूसरों के लिए अज़ाब।

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴿4﴾

४. फिर दोहराकर दो-दो बार देख ले, तेरी निगाह तेरी तरफ़ ज़लील (और मजबूर) होकर थकी हुई लौट आयेगी।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ﴿5﴾

५. और बेशक हम ने दुनियावी आसमान को दीपों (तारों) से सुशोभित (मुज़य्यन) किया और उन्हें शैतानों को मारने का साधन (ज़रिया) बना दिया[1] और शैतानों के लिए हम ने (जहन्नम में जलाने वाला) अज़ाब तैयार कर दिया।

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿6﴾

६. और अपने रब के साथ कुफ़्र करने वालों के लिए नरक (जहन्नम) का अज़ाब है, और वह क्या ही बुरी जगह है।

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ﴿7﴾

७. जब उस में ये डाले जायेंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह उबाल खा रहा होगा।[2]

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿8﴾

८. (ज़ाहिर होगा कि अभी) गुस्से के मारे फट पड़ेगा,[3] जब कभी उस में कोई गिरोह डाला जायेगा उस से नरक (जहन्नम) के दरोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?

[1] यहाँ तारों के दो मक़सद बताये गये हैं, एक आकाशों की शोभा (ज़ीनत) क्योंकि वह चिराग़ों की तरह जलते दिखाई देते हैं। दूसरे अगर शैतान आकाशों की तरफ़ जाने की कोशिश करते हैं तो यह आग बनकर उन पर गिरते हैं। तीसरे उनका यह मक़सद है जिसे दूसरी जगह पर बयान किया गया है कि उन से जल-थल में रास्ते का इशारा मिलता है।

[2] شَهِيق उस आवाज़ को कहते हैं जो गधा पहली बार निकालता है, यह बहुत बुरी आवाज़ होती है। जहन्नम भी गधे की तरह चीख़ चिल्ला रही और आग पर रखी हाँडी के समान खौल रही होगी।

[3] यानी गुस्सा और ग़ज़ब के मारे उस के एक हिस्से एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे, यह जहन्नम काफ़िरों को देखकर गुस्सा हो जायेगी, जिसकी समझ अल्लाह तआला उस के भीतर पैदा कर देगा, अल्लाह तआला के लिए जहन्नम के भीतर बोध (शुउर) और संवेदन (एहसास) पैदा कर देना कोई कठिन नहीं है।

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ⑨

९. वे जवाब देंगे कि बेशक आया तो था, लेकिन हम ने उसे झुठलाया और कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया, तुम बहुत बड़ी गुमराही में ही हो।

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑩

१०. और कहेंगे कि अगर हम सुनते होते या समझते होते तो नरकवासियों में (शामिल) न होते।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑪

११. तो उन्होंने अपने गुनाह को क़ुबूल कर लिया, अब ये नरकवासी (जहन्नमी) हट जायें (दूर हों)।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑫

१२. बेशक जो लोग अपने रब से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उन के लिए माफ़ी है और बड़ा बदला है।

وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑬

१३. और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छी तरह जानता है।

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ⑭

१४. क्या वही न जाने जिसने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी हो।[1]

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ⑮

१५. वह वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को पस्त (और कोमल) बनाया,[2] ताकि तुम उस के रास्तों पर आना-जाना (आवागमन) करते रहो और उस की दी हुई जीविका (रिज़्क़) को खाओ-पिओ, उसी की तरफ़ (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।

[1] لَطِيْفٌ का मतलब है बारीक देखने वाला, "यानी जिसका ज्ञान (इल्म) इतना बारीक है कि दिल की बातों को भी वह जानता है।" (फ़तहुल क़दीर)

[2] ذَلُوْلٌ का मतलब है पस्त, जो तुम्हारे आगे झुक जाये, सिर न फेरे, यानी धरती को तुम्हारे लिए कोमल और आसान कर दिया है, उसे इतनी कड़ी नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर आबाद होना और यातायात (सफ़र) कठिन हो।

ءَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿16﴾

१६. क्या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कपकपा उठे।

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿17﴾

१७. या क्या तुम इस बात से निर्भीक (बेखौफ) हो गये हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे?[1] फिर तो तुम्हें मालूम हो ही जायेगा कि मेरा डराना कैसा था।

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿18﴾

१८. और उन से पहले के लोगों ने भी झुठलाया था (तो देखो) उन पर मेरा अजाब कैसा कुछ हुआ?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿19﴾

१९. क्या ये अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए और (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पंक्षियों को नहीं देखते,[2] उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (फ़िजा और आकाश में) थामे हुए है। बेशक हर चीज उसकी निगाह में है।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿20﴾

२०. अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी मदद कर सके, काफ़िर तो पूरी तरह से धोखे ही में हैं।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿21﴾

२१. अगर अल्लाह (तआला) अपनी रोजी रोक ले, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी रोजी देगा? बल्कि (काफ़िर) तो सरकशी और बिदकने पर मजबूत हो गये हैं।

أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿22﴾

२२. अच्छा वह इंसान ज़्यादा हिदायत पर है जो अपने मुँह के बल औंधा होकर चले[3] या वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे रास्ते पर चल रहा हो?

---

[1] जैसे उस ने लूत की जाति (क़ौम) और असहाबुल फ़ील (हाथी वाले अबरहा और उसकी सेना) पर बरसाये और पत्थरों की बारिश से उनका विनाश (हलाक) कर दिया।

[2] यानी पंक्षी जब हवा में उड़ता है तो वह पंख फैला लेता है और कभी उड़ने के बीच पंखों को सिकोड़ लेता है, यह फैलाना صَفّ (सफ़्फ़) और सिकोड़ना قَبْض (क़ब्ज़) है।

[3] मुँह के बल औंधे चलने वाले को दायें-बायें और आगे कुछ नहीं दिखता, न वह ठोकरों से सुरक्षित (महफ़ूज़) रहता है, क्या ऐसा इंसान अपने मक़सद तक पहुँच सकता है? बेशक (निश्चय) वह नहीं पहुँच सकता। इसी तरह दुनिया में अल्लाह के हुक्म को न मानने वाला इंसान आख़िरत (परलोक) की कामयाबी से महरूम (वंचित) रहेगा।

قُلْ هُوَ الَّذِىٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿23﴾

२३. कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये,[1] तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿24﴾

२४. कह दीजिए कि वही है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया और उसकी तरफ तुम जमा किये जाओगे।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿25﴾

२५. और (काफ़िर) पूछते हैं कि वह वादा कब जाहिर होगा अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ)?

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۠ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿26﴾

२६. (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान (इल्म) तो अल्लाह ही को है, मैं तो साफ़ तौर से आगाह कर देने वाला हूँ।[2]

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـــَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿27﴾

२७. जब ये लोग उस (वादे) को क़रीब पा लेंगे, उस समय इन काफ़िरों के मुँह बिगड़ जायेंगे[3] और कह दिया जायेगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِىَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿28﴾

२८. (आप) कह दीजिए! कि ठीक है अगर मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) हलाक कर दे या हम पर रहम करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफ़िरों को कष्टदायी (तक़लीफ़दह) अज़ाब से कौन बचायेगा?[4]

---

[1] जिन से तुम सुन सको, देख सको और अल्लाह की रचना (तख़लीक़) में ग़ौर-फ़िक्र कर उसका इल्म हासिल (प्राप्त) कर सको। तीन ताक़तों की चर्चा किया है, जिन से इंसान देखने, सुनने और समझने की चीजों का इल्म हासिल कर सकता है। यह एक तरह से दलील की तकमील (पूर्ति) भी है और अल्लाह के इन एहसानों पर शुक्रिया न करने की निन्दा (मज़म्मत) भी। इसी तरह आगे फ़रमाया : "तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो।"

[2] यानी मेरा काम तो उस नतीजा से डराना है जो मुझे झुठलाने की वजह तुम्हारा होगा, दूसरे लफ़्ज़ों में मेरा काम सावधान (आगाह) करना है, ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें बताना नहीं, लेकिन यह कि जिस के बारे में अल्लाह ख़ुद मुझे बता दे।

[3] यानी ज़िल्लत, दहशत और डर से उन के चेहरों पर हवाईयाँ उड़ रही होंगी, जिस को दूसरी जगहों पर चेहरों के काले होने से व्यंजित (ताबीर) किया गया है। (आले-इमरान : १०६)

[4] मतलब यह है कि इन काफ़िरों को तो अल्लाह के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं है, चाहे अल्लाह अपने रसूल और उस पर ईमान लाने वालों को मौत या क़त्ल द्वारा बरबाद कर दे या उन्हें मौक़ा दे दे, या यह मतलब है कि हम ईमान लाकर भी डर और उम्मीद के बीच हैं "तो तुम्हारे कुफ़्र के बावजूद तुम्हें अज़ाब से कौन बचायेगा"?

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿29﴾

२९. (आप) कह दीजिए कि वही रहमान है, हम तो उस पर ईमान ला चुके और उसी पर हम ने भरोसा किया, तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि साफ़ भटकावे में कौन है?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿30﴾

३०. (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि अगर तुम्हारे (पीने का) पानी धरती चूस जाये, तो कौन है, जो तुम्हारे लिए निथरा हुआ साफ़ पानी लाये।[1]

سُوْرَةُ الْقَلَمِ

सूरतुल क़लम-६८

सूर: क़लम मक्के में नाज़िल हुई, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿1﴾

१. नून[2] क़सम है क़लम की[3] और उस की जो कुछ कि वे (फ़रिश्ते) लिखते हैं।

---

[1] غَوْر (गौर) का मतलब है सूख जाना या इतनी गहराई में चला जाना कि वहाँ से पानी निकालना मुमकिन न हो, यानी अगर अल्लाह तआला पानी सुखा दे कि उसका अस्तित्व (वजूद) ही न रह जाये या इतनी गहराई में कर दे कि पानी निकालने की सब मशीनें नाकाम हो जायें तो बताओ फिर कौन है जो बहते हुए, साफ़, निथरा पानी सुलभ (मुहैय्या) करा दे? यानी कोई नहीं है, यह अल्लाह की दया (रहमत) है कि तुम्हारी नाफ़रमानी के बावजूद भी वह तुम्हें पानी से महरूम (वंचित) नहीं करता।

[2] ن उसी तरह के अलग अक्षरों (हुरूफ़) में से है, जैसे इस से पहले ص, ق और दूसरी सूरतों के शुरूआती अक्षर (हरफ़) गुज़र चुके हैं।

[3] क़लम की क़सम खाई जिसकी इसलिए एक अहमियत है कि इस के द्वारा (ज़रिये) बयान और तफ़सीर होती है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद वह ख़ास क़लम है, जिसे अल्लाह ने सब से पहले पैदा किया और उसे तक़दीर लिखने का हुक्म दिया, इसलिए उस ने आख़िर तक सभी होने वाली चीज़ों को लिख दिया। (तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरह नून वल क़लम और अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

مَآ اَنۡتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُوۡنٍ ﴿2﴾

२. आप अपने रब की कृपा (नेमत) से पागल नहीं हैं।[1]

وَاِنَّ لَكَ لَاَجۡرًا غَيۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ﴿3﴾

३. और बेशक आप के लिए न ख़त्म होने वाला बदला है।[2]

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيۡمٍ ﴿4﴾

४. और बेशक आप बहुत (अच्छे) स्वभाव (अख़लाक़) पर हैं।[3]

فَسَتُبۡصِرُ وَيُبۡصِرُوۡنَ ﴿5﴾

५. तो अब आप भी देख लेंगे और यह भी देख लेंगे।

بِاَيِّٮكُمُ الۡمَفۡتُوۡنُ ﴿6﴾

६. कि तुम में से फ़ित्ना में पड़ा कौन है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿7﴾

७. बेशक तेरा रब अपनी राह से भटकने वालों को अच्छी तरह जानता है, और वह हिदायत पाये को भी अच्छी तरह जानता है।

فَلَا تُطِعِ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿8﴾

८. तो आप झुठलाने वालों की (बात) क़ुबूल न करें।

وَدُّوۡا لَوۡ تُدۡهِنُ فَيُدۡهِنُوۡنَ ﴿9﴾

९. वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो ये भी ढीले पड़ जायें।[4]

---

[1] यह क़सम का जवाब है, जिस में काफ़िरों के क़ौल का खण्डन (तरदीद) है, वह आप को दीवाना कहते थे।

[2] नबूवत (दूतत्व) के फ़रायेज़ को पूरा करने के लिए जो भी दुख आप ने सहन किये और दुश्मनों के ताने आप ने सुने हैं उस पर अल्लाह की तरफ़ से कभी न ख़त्म होने वाला बदला आप के लिए है, مَنّ का मतलब काटना है।

[3] خُلُقٍ عَظِيمٍ से मुराद दीने इस्लाम या पाक क़ुरआन है, मतलब यह है कि तू उस तरीक़ा पर है जिसका हुक्म तुझे अल्लाह ने क़ुरआन में या दीने इस्लाम में दिया है, या इस से मुराद वह सभ्यता, शिष्टाचार (आदाब), नर्मी, शफ़क़त, अमानत, सच्चाई, संजीदगी, श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और दूसरे अख़लाक़ी सिफ़ात हैं, जिन में आप ﷺ नबी होने से पहले फ़ज़ीलत रखते थे और नबी होने के बाद भी उन में ज़्यादा ऊँचाई और फैलाव हुआ। इसीलिए जब आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से आप के अख़लाक़ के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया: «كَانَ خُلُقُهُ القُرآنَ» (मुस्लिम, किताबुल मुसाफ़िरीन, बाबु जामेए सलातिल लैले व मन नाम अन्हु औ मरेज़) हज़रत आयेशा का जवाब ख़ुल्के अज़ीम «خُلُقٍ عَظِيمٍ» के मज़कूरा दोनों मायनों को घेरे हुए है।

[4] यानी वह तो चाहते हैं कि तू उन के पूज्यों के बारे में नर्म तरीक़ा अपनाये, लेकिन झूठ के साथ नर्म तरीक़ा का नतीजा यह होगा कि बातिल के पुजारी अपनी बातिल की पूजा छोड़ने में ढीले

१०. और आप किसी ऐसे इंसान का भी कहना न मानें जो ज़्यादा क़समें खाने वाला हीन (ज़लील) हो।	وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ﴿10﴾
११. कमीना, ऐब निकालने वाला और चुग़ली करने वाला हो।	هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ ﴿11﴾
१२. भलाई से रोकने वाला, हद से बढ़ जाने वाला पापी हो।	مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿12﴾
१३. घमंडी फिर साथ ही कुवंश (बेनसब) हो।	عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿13﴾
१४. (उसकी सरकशी) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है।	أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿14﴾
१५. जब उस के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये तो पहले के लोगों की कथायें (क़िस्से) हैं।	إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿15﴾
१६. हम भी उसकी सूँड (नाक) पर दाग़ देंगे।[1]	سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿16﴾
१७. बेशक हम ने उनकी उसी तरह परीक्षा (इम्तेहान) ली,[2] जिस तरह हम ने बाग़ वालों की परीक्षा ली थी।[3] जबकि उन्होंने क़सम खायी	إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿17﴾

हो जायेंगे, इसलिए सच के बारे में सुस्ती, धर्म के प्रचार (तबलीग़) के लिए और नबूवत (दूतत्व) के काम के लिए बहुत नुक़सान दायक है।

[1] कुछ के नज़दीक इस का तआल्लुक़ दुनिया से है, कहा जाता है कि बद्र की लड़ाई में उन काफ़िरों की नाकों को तलवारों का निशाना बनाया गया। कुछ कहते हैं कि यह क़यामत के दिन नरकवासियों का निशान होगा कि उनकी नाकों को दाग़ दिया जायेगा, या इसका मतलब चेहरों की कालिमा (स्याही) है, जैसाकि काफ़िरों के चेहरे उस दिन काले होंगे। कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का यह नतीजा लोक-परलोक (दुनिया-आख़िरत) दोनों जगह मुमकिन है।

[2] मतलब मक्कावासी हैं, उन्हें माल और औलाद दिया ताकि वह अल्लाह का शुक्र करें, लेकिन उन्होंने नाशुक्री और घमण्ड का रास्ता अपनाया तो हम ने उन्हें भूख और सूखा के इम्तेहान में डाल दिया, जिस में वह नबी ﷺ के शाप (बद्दुआ) की वजह से कुछ दिन फंसे रहे।

[3] बाग़ वालों की कथा अरबों में मशहूर थी। यह बाग़ सन्आ (यमन) से दो फ़रसंग (छ: मील) की दूरी पर था, उसका मालिक उसकी पैदावार में से कुछ हिस्सा ग़रीबों और फ़क़ीरों पर भी ख़र्च करता था जब उसकी औलाद उसकी वारिस बनी तो उन्होंने कहा कि हमारा ख़र्च ही कठिनाई से पूरा होता है तो हम उसकी आय (आमदनी) ग़रीबों और फ़क़ीरों को कैसे दें इसलिए अल्लाह

कि सुबह होते ही उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे।

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ⑱

१८. और इंशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) न कहा।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ⑲

१९. तो उस पर तेरे रब की तरफ़ से एक बला चारों तरफ़ से घूम गयी और वे सो ही रहे थे।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ⑳

२०. तो वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।[1]

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ㉑

२१. अब सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ें दीं।

أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ㉒

२२. कि अगर तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सुबह ही चल पड़ो।

فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ㉓

२३. फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।

أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ㉔

२४. कि आज के दिन कोई ग़रीब तुम्हारे पास न आये।

وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ㉕

२५. और जल्दी-जल्दी सुबह ही पहुँच गये (समझ रहे थे) कि हम क़ाबू पा गये।

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ㉖

२६. फिर जब उन्होंने बाग़ देखा तो कहने लगे कि बेशक हम रास्ता भूल गये।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ㉗

२७. नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिये गये।

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ㉘

२८. उन सब में जो अच्छा था उस ने कहा कि मैं तुम सब से न कहता था कि तुम (अल्लाह की) तस्बीह क्यों नहीं करते?[2]

ने उस बाग़ ही को तबाह कर दिया। कहते हैं कि यह घटना (वाक़ेआ) हज़रत ईसा عليه السلام के आकाश पर उठाये जाने के कुछ समय बाद ही हुई। (फ़तहुल क़दीर) यह सभी बयान तफ़सीर वाली रिवायतों का है।

[1] यानी जैसे खेती कटने के बाद सूख जाती है, उसी तरह पूरा बाग़ उजड़ गया। कुछ ने अनुवाद (तर्जुमा) किया है, 'काली रात की तरह हो गया' यानी जलकर।

[2] कुछ ने यहाँ तस्बीह का मायने "इन्शा अल्लाह" कहना लिया है।

قَالُوا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿29﴾

२९. (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पाक है, बेशक हम ही ज़ालिम थे ।[1]

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿30﴾

३०. फिर वे एक-दूसरे की तरफ़ मुँह करके बुरा-भला कहने लगे ।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿31﴾

३१. कहने लगे हाय अफ़सोस! बेशक हम सरकश थे ।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿32﴾

३२. क्या विचित्र (अजब) है कि हमारा रब हमें इस से अच्छा बदला दे दे, बेशक हम अब अपने रब से ही उम्मीद रखते हैं ।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿33﴾

३३. इसी तरह अज़ाब आता है, और आख़िरत का अज़ाब बहुत बड़ा है । काश! उन्हें अक़्ल होती ।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿34﴾

३४. बेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के पास उपहारों (नेमतों) वाली जन्नतें हैं ।

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿35﴾

३५. क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों के बराबर कर देंगे ।

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿36﴾

३६. तुम्हें क्या हो गया, कैसे फ़ैसले कर रहे हो?

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿37﴾

३७. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो?

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿38﴾

३८. कि उस में तुम्हारी मनमानी बातें हों?

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿39﴾

३९. या हम से तुम ने कुछ ऐसी क़समें ली हैं जो क़यामत (प्रलय के दिन) तक बाक़ी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम अपनी तरफ़ से

[1] यानी अब उन्हें मालूम हुआ कि हम ने अपने बाप के तरीक़े के उल्टा काम करके ग़लती की है, जिसकी सज़ा अल्लाह ने हम को दिया है । इस से यह भी मालूम हुआ कि पाप का इरादा और उस के लिए शुरूआती काम भी पाप ही के तरह गुनाह है जिस पर पकड़ हो सकती है, केवल वह इरादा माफ़ है जो दिल की सीमा (हद) तक रहता है ।

निर्धारित (मुक़र्रर) कर लो?

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿40﴾

४०. उन से पूछो कि उन में से कौन इस बात का ज़िम्मेदार (और दावेदार) है।

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿41﴾

४१. क्या उन के कुछ साझीदार हैं? तो चाहिए कि अपने-अपने साझीदारों को ले आयें अगर ये सच्चे हैं।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿42﴾

४२. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और सज्दा करने के लिए बुलाये जायेंगे तो (सज्दा) न कर सकेंगे।[1]

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿43﴾

४३. उन की आँखें नीची होंगी और उन पर ज़िल्लत (और रुसवाई) छा रही होगी, हालांकि ये सज्दे के लिए (उस समय भी) बुलाये जाते थे जब भले-चंगे थे।

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿44﴾

४४. तो मुझे और इस बात के झुठलाने वाले को छोड़ दे, हम उन्हें इस तरह धीरे-धीरे खींचेंगे कि उन्हें मालूम भी न होगा।[2]

---

[1] कुछ ने पिंडली खोलने का मायने क़यामत की कठिनाईयाँ और भयानकता ली है, लेकिन एक सहीह हदीस में इसकी व्याख्या (तफ़सीर) इस तरह बयान हुई है कि क़यामत के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा (जैसे उसकी शान के लायक़ है) तो हर मोमिन मर्द और औरत उस के आगे सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ, वह लोग बाक़ी रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिए सज्दे किया करते थे, वह सज्दा करना चाहेंगे तो उनकी रीढ़ की हड्डी तख़्ते की तरह बन जायेगी जिस की वजह से उनका झुकना नामुमकिन हो जायेगा। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह नून वल क़लम) अल्लाह यह पिंडली कैसे खोलेगा और यह कैसी होगी? यह हम न जान सकते हैं न बयान कर सकते हैं, इसलिए जिस तरह किसी उपमा (तश्बीह) के बिना हम उसके कान, आँख और हाथ वग़ैरह पर यक़ीन रखते हैं, ऐसे ही पिंडली की बात भी क़ुरआन और हदीस में है, जिस पर बिना तश्बीह के यक़ीन रखना ज़रूरी है। यही सलफ़ और मुहद्देसीन (हदीस के आलिमों) की राय है।

[2] यह उसी ढील देने का बयान है जिसे क़ुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है और हदीस में भी साफ़ किया गया है कि नाफ़रमानी के बावजूद माल और साधन का ज़्यादा होना अल्लाह की दया (रहमत) नहीं है, उस के मौक़ा देने के क़ानून का नतीजा है, फिर जब वह पकड़ने पर आता है तो कोई बचाने वाला नहीं होता।

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿45﴾

४५. और मैं उन्हें ढील दूँगा, बेशक मेरी योजना (तदबीर) बड़ी मज़बूत है।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿46﴾

४६. क्या तू उन से कोई पारिश्रमिक (उजरत) चाहता है, जिस के भार से ये दबे जाते हों।

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿47﴾

४७. या क्या उनके पास परोक्ष (ग़ैब) का इल्म है जिसे वे लिखते हों।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿48﴾

४८. तो तू अपने रब के हुक्म का सब्र से (इंतेज़ार कर) और मछली वाले की तरह न हो जा,[1] जबकि उस ने दुख की हालत (अवस्था) में पुकारा।[2]

لَّوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿49﴾

४९. अगर उसे उस के रब की नेमत (कृपा) न पा लेती तो बेशक वह बुरी हालत में ऊसर धरती पर डाल दिया जाता।

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿50﴾

५०. तो उसे उस के रब ने फिर निर्वाचित किया[3] और उसको सदाचारियों (सालेहीनों) में कर दिया।[4]

---

[1] जिन्होंने अपनी जाति के झुठलाने के रवय्या को देखते हुए उतावलेपन से काम लिया और अल्लाह के फ़ैसले के बिना ही अपने-आप अपनी जाति को छोड़कर निकल गये।

[2] जिस के परिणामस्वरूप (नतीजतन) उन्हें मछली के पेट में जबकि वह शोक (ग़म) और चिन्ता से भरे हुए थे, अपने रब को सहायता (मदद) के लिए पुकारना पड़ा। जैसाकि बयान पहले गुज़र चुका है।

[3] इसका मतलब यह है कि उन्हें अच्छा और स्वस्थ (सेहतमंद) करने के बाद फिर रिसालत से सम्मानित (सरफ़राज़) करके उन्हें अपनी जाति (क़ौम) की तरफ़ भेजा गया, जैसा कि सूरह साफ़्फ़ात १४६ से भी स्पष्ट (वाज़ेह) है।

[4] इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि कोई यह न कहे कि मैं यूनुस पुत्र मत्ता से बेहतर हूँ। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाएल बाबुन फ़ी ज़िक्रे यूनुस ...) और ख़ास देखिये सूर: बक़र: की आयत न॰ २५३ की तफ़सीर।

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ (51)

५१. और क़रीब है कि (ये) काफ़िर अपनी (तेज़) निगाह से आप को फिसला दें,[1] जब कभी क़ुरआन सुनते हैं और कह देते हैं कि यह तो यक़ीनी तौर से दीवाना है।

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ (52)

५२. और हक़ीक़त में यह (क़ुरआन) तो सारी दुनिया वालों के लिए पूरी शिक्षा ही है।[2]

सूरतुल हाक़्क़:-६९

سُورَةُ الْحَاقَّةِ

सूर: हाक़्क़: मक्का में नाज़िल हुई, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الْحَاقَّةُ (1)

१. साबित (सिद्ध) होने वाली।[3]

مَا الْحَاقَّةُ (2)

२. क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ (3)

३. और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है?

---

[1] यानी अगर तुझे अल्लाह की मदद और सुरक्षा न मिलती तो इन काफ़िरों की हसद (ईर्ष्या) वाली निगाहों से तू बुरी नज़र का शिकार हो जाता, यानी उनकी नज़र तुझे लग जाती। इमाम इब्ने कसीर ने इसका यही मतलब बयान किया है, फिर लिखते हैं कि यह इस बात का सुबूत है कि नज़र का लग जाना और अल्लाह की इजाज़त से उसका दूसरों पर प्रभावकारी (असरअंदाज़) होना सच है। जैसाकि कई हदीसों से भी साबित है और हदीसों में उस से बचने के लिए दुआओं का बयान भी है, और यह भी कहा गया है कि तुम्हें कोई चीज़ अच्छी लगे तो ماشاء الله (माशा अल्लाह) या بارك الله (बारकल्लाह) कहा करो ताकि उसे नज़र न लगे। ऐसे ही किसी को नज़र लग जाये तो फ़रमाया कि उसे स्नान (ग़ुस्ल) करा कर उसका पानी उस पर डाला जाये जिसको उसकी नज़र लगी है। (तफ़सील के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर और हदीस की किताबें) कुछ ने इसका मायने यह लिया है कि यह तुझे धर्म का प्रचार (तब्लीग़) करने से फेर देते।

[2] जब सच यह है कि यह क़ुरआन जिन्नों और इंसानों की हिदायत और निर्देश (रहनुमाई) के लिए आया है तो फिर इस को लाने और बयान करने वाला उन्मत्त (दीवाना) कैसे हो सकता है?

[3] यह क़यामत के नामों में से एक नाम है। इस में अल्लाह का हुक्म साबित होगा और यह ख़ुद भी होने वाला है, इसलिए इसे अलहाक़्क़: से व्यंजित (ताबीर) किया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿4﴾

४. उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने झुठला दिया था।

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿5﴾

५. (जिसके नतीजे में) समूद तो बड़ी तेज़ (और भयानक ऊँची) ध्वनि (चीख़) से हलाक कर दिये गये।[1]

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿6﴾

६. और आद बड़ी तेज़ गति की पाले वाली आँधी से बरबाद कर दिये गये।[2]

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿7﴾

७. जिसे उन पर लगातार सात रात और आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाये रखा[3] तो तुम देखते कि ये लोग धरती पर इस तरह पछाड़े गये हैं जैसे खजूर के खोखले तने हों।[4]

فَهَلْ تَرَىٰ لَهُم مِّن بَاقِيَةٍ ﴿8﴾

८. तो क्या उन में से कोई भी तुझे बाक़ी दिखायी दे रहा है ?

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَن قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿9﴾

९. फ़िरऔन और उस से पहले के लोग और जिनकी बस्तियाँ उलट दी गयीं, उन्होंने भी ग़लतियाँ (पाप) कीं।

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿10﴾

१०. और अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की, (आख़िर में) अल्लाह ने उन्हें (भी) पकड़ में ले लिया।

إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿11﴾

११. जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हम ने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया।

---

1 طَاغِيَة ऐसी चीख़ जो सीमा पार कर जाये, यानी बड़ी भयानक और ऊँची चीख से समूद के समुदाय को विनष्ट (हलाक) किया गया, जैसाकि पहले कई जगहों पर गुज़रा।

2 صَرْصَر (सरसर) पाले की हवा, عَاتِيَة (आतियह) सरकश, किसी के वश में न आने वाली, यानी बड़ी तेज़ और प्रचंड, आँधी के ज़रिये नबी हूद عليه السلام की क़ौम आद को बरबाद किया गया।

3 حَسْم (हसम) का मतलब काटना और अलग-अलग कर देना है और कुछ ने حُسُومًا का मतलब निरन्तर (मुसल्सल) किया है।

4 इस से उन के शारीरिक (जिस्मानी) लम्बाई की तरफ़ भी इशारा है خَاوِيَة (खावेयह)। खोखले, बेजान शरीर (जिस्म) को खोखले तने से मिसाल दी है।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴿12﴾

१२. ताकि उसे तुम्हारे लिये नसीहत (और यादगार) बना दें और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।

فَإِذَا نُفِخَ فِى الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿13﴾

१३. तो जब नरसिंघा (सूर) में एक फूंक फूंकी जायेगी।

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿14﴾

१४. और धरती तथा पहाड़ उठा लिये जायेंगे और एक ही चोट में कण-कण (ज़र्रा-ज़र्रा) बना दिये जायेंगे।

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿15﴾

१५. उस दिन हो पड़ने वाली घटना (क़यामत) हो पड़ेगी।

وَانشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿16﴾

१६. और आसमान फट जायेगा तो उस दिन बड़ा कमज़ोर हो जायेगा।

وَالْمَلَكُ عَلَىٰٓ أَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَٰنِيَةٌ ﴿17﴾

१७. और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे[1] और तेरे रब का अर्श (आसन) उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये हुए होंगे।[2]

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿18﴾

१८. उस दिन तुम सब सामने पेश किये जाओगे, तुम्हारा कोई राज़ छिपा न रहेगा।

فَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَيَقُولُ هَآؤُمُ ٱقْرَءُوا۟ كِتَٰبِيَهْ ﴿19﴾

१९. तो जिस का कर्मपत्र (आमालनामा) उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।

---

[1] यानी आसमान तो टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे फिर आसमानी सृष्टि (मख़लूक़) फ़रिश्ते कहाँ रहेंगे? फ़रमाया : वह आकाशों के किनारों पर होंगे। इसका एक मतलब तो यह हो सकता है कि फ़रिश्ते आकाश के फटने के पहले अल्लाह के हुक्म से धरती पर आ जायेंगे तो मानो वे धरती के किनारे पर होंगे, या यह मतलब हो सकता है कि आकाश टूट-फूटकर कई टुकड़ों में होगा तो उन टुकड़ों पर जो धरती के किनारों में और अपनी जगह स्थित (क़ायम) होंगे उन पर होंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यानी इन ख़ास फ़रिश्तों ने अल्लाह के अर्श (आसन) को अपने सिरों पर उठाया होगा, यह भी मुमकिन है कि इस अर्श से मुराद वह अर्श हो जो फ़ैसले के लिए धरती पर रखा जायेगा जिस पर अल्लाह का अवतरण (नुज़ूल) होगा। (इब्ने कसीर)

إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿20﴾

२०. मुझे तो पूरा यकीन था कि में अपना हिसाब पाने वाला हूँ।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿21﴾

२१. तो वह एक सुखद (खुशहाल) जीवन में होगा।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿22﴾

२२. ऊंचे (और ख़ूबसूरत) जन्नत में।[1]

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿23﴾

२३. जिस के फल झुके पड़े होंगे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿24﴾

२४. (उन से कहा जायेगा) कि मजे से खाओ पियो, अपने उन कर्मों (अमल) के बदले जो तुम ने पिछले जमाने में किये।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ ﴿25﴾

२५. लेकिन जिसे उस का कर्मपत्र (आमाल-नामा) बायें हाथ में दिया जायेगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता।

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿26﴾

२६. और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।

يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿27﴾

२७. काश! मौत (मेरा) काम ही ख़त्म कर देती।

مَآ أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ﴿28﴾

२८. मेरे धन ने भी मुझे कोई फ़ायेदा (लाभ) न दिया।

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَٰنِيَهْ ﴿29﴾

२९. मेरा राज्य भी मुझ से जाता रहा।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿30﴾

३०. (हुक्म होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक़ पहना दो।

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ﴿31﴾

३१. फिर उसे नरक (जहन्नम) में डाल दो।

[1] स्वर्ग (जन्नत) में कई दर्जे होंगे, हर दर्जे के बीच बड़ी दूरी होगी, जैसे मुजाहिदीन के बारे में नबी ﷺ ने फ़रमाया : "स्वर्ग (जन्नत) में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने मुजाहिदीन के लिए तैयार किये हैं, दो दर्जे के बीच आकाश और धरती जितनी दूरी होगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारः, सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद)

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ (32)

३२. फिर उसे ऐसी जंजीर में जिस की नाप सत्तर हाथ की है, जकड़ दो ।[1]

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ (33)

३३. बेशक यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था ।

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ (34)

३४. और ग़रीब को खिलाने पर नहीं उभरता था ।[2]

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ (35)

३५. तो आज यहाँ उसका न कोई दोस्त है,

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ (36)

३६. और न पीप के सिवाय उसका कोई खाना है ।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ (37)

३७. जिसे पापियों के सिवाय उसको कोई नही खायेगा ।[3]

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ (38)

३८. तो मुझे क़सम है उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो ।

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ (39)

३९. और उन चीज़ों कि जिन्हें तुम नहीं देखते ।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ (40)

४०. कि बेशक यह (क़ुरआन) प्रतिष्ठित (बाइज़्ज़त) रसूल का क़ौल है ।[4]

---

[1] यह ذراع जिराअ (हाथ) किसका हाथ होगा और कितना होगा? इसकी तफ़सीर मुमकिन नहीं । फिर भी इस से इतना मालूम हुआ कि जंजीर की लम्बाई सत्तर हाथ होगी ।

[2] यानी इबादत और अनुपालन (इताअत) के ज़रिये अल्लाह का हक़ अदा न करता था न हक़ जो बंदों का बंदों पर है । मानो ईमानवालों में यह बात होती है कि वह अल्लाह के हक़ और बंदों के हक़ दोनों को पूरा करते हैं ।

[3] خاطئون से मुराद नरकवासी (जहन्नमी) हैं, जो कुफ़्र और शिर्क की वजह से जहन्नम में दाख़िल होंगे, क्योंकि यही ऐसे पाप हैं जो नरक में सदा रहने की वजह हैं ।

[4] प्रतिष्ठित (बाइज़्ज़त) रसूल से मुराद मोहम्मद ﷺ हैं और क़ौल (कथन) से मुराद पढ़ना है, यानी सम्मानित (बाइज़्ज़त) रसूल का पढ़ना, या क़ौल से मुराद ऐसा क़ौल है जो यह बाइज़्ज़त रसूल अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें पहुँचाता है, क्योंकि क़ुरआन रसूल या जिब्रील का क़ौल नहीं है बल्कि अल्लाह का क़ौल है जो उस ने फ़रिश्ते के द्वारा (ज़रिये) पैग़म्बर पर उतारा है, फिर पैग़म्बर उसे लोगों तक पहुँचाता है ।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ﴿41﴾

४१. यह किसी शायर का क़ौल नहीं, (अफ़सोस) तुम बहुत कम यक़ीन रखते हो।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿42﴾

४२. और न किसी ज्योतिषी (काहिन) का क़ौल है, (अफ़सोस) तुम बहुत कम नसीहत हासिल कर रहे हो।

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿43﴾

४३. (यह तो) सारी दुनिया के रब का नाज़िल किया हुआ है।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ﴿44﴾

४४. और अगर यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।[1]

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿45﴾

४५. तो ज़रूर हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते,[2]

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿46﴾

४६. फिर उस के दिल की नस काट लेते।[3]

فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿47﴾

४७. फिर तुम में से कोई भी (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿48﴾

४८. बेशक यह (क़ुरआन) परहेज़गारों के लिए शिक्षा (नसीहत) है।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿49﴾

४९. और हमें पूरा इल्म (ज्ञान) है कि तुम में से कुछ उस के झुठलाने वाले हैं।

---

[1] यानी अपनी तरफ़ से गढ़कर हम से संबन्धित (मंसूब) कर देता, या उस में कमी-बेशी कर देता तो तुरन्त हम उसकी पकड़ करते और उसे ढील न देते जैसाकि अगली आयतों में फ़रमाया।

[2] या दायें हाथ से उसकी पकड़ करते, क्योंकि दायें हाथ से पकड़ कड़ी होती है और अल्लाह के तो दोनों हाथ ही सीधे हैं, जैसाकि हदीस में है।

[3] ध्यान रहे कि यह सज़ा ख़ास कर नबी ﷺ के बारे में आई है जिसका मक़सद आप की सच्चाई दिखाना है, इस में यह नियम नहीं बताया गया है कि जो भी नबूवत का झूठा दावा करेगा तो नबूवत के झूठे दावेदार को हम तुरन्त सज़ा देंगे, इसलिए इस से किसी झूठे नबी कोसच्चा नहीं कहा जा सकता कि वह दुनिया में अल्लाह के अज़ाब से सुरक्षित (महफ़ूज़) रहा। घटनायें (वाक़ेआत) भी गवाह हैं कि कई लोगों ने नबूवत के झूठे दावे किये और अल्लाह ने उन्हें ढील दी और वह दुनियावी पकड़ से आम तौर से महफ़ूज़ ही रहे, इसलिए अगर इसे नियम मान लिया जाये तो फिर बहुत से नबूवत के झूठे दावेदारों को 'सच्चा नबी' मानना पड़ेगा।

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَٰفِرِينَ (50)

५०. बेशक (यह झुठलाना) काफिरों के लिए पछतावा है।

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ (51)

५१. और बेशक यह यक़ीनी सच है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ (52)

५२. तो तू अपने महिमावान (अज़ीम) रब की पवित्रता (तस्बीह) बयान कर।

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

सूरतुल मआरिज-७०

सूर: मआरिज मक्का में नाज़िल हुई, इस में चव्वालिस आयतें और दो रूकूअ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ (1)

१. एक माँग करने वाले ने उस अज़ाब की माँग की जो (वाक़े) होने वाला है।

لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ (2)

२. काफ़िरों पर जिसे कोई हटाने वाला नहीं।

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ (3)

३. उस अल्लाह की तरफ़ से जो सीढ़ियों वाला है।

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ (4)

४. जिस की तरफ़ फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं[1] एक दिन में जिसकी अवधि (मुद्दत) पचास हज़ार साल की है।[2]

---

[1] रूह (आत्मा) से मतलब जिब्रील (फ़रिश्ता) है, उनकी प्रधानता (फ़ज़ीलत) की वजह से उनका अलग ख़ास तौर से बयान किया गया है, नहीं तो फ़रिश्तों में वह भी शामिल हैं, या रूह से मतलब इंसानी रूहें है जो मौत के बाद आसमान पर ले जाई जाती हैं, जैसाकि कुछ रिवायतों (हदीसों) में है।

[2] उस दिन के निर्धारण (तअय्युन) में बहुत मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, एक कथन (क़ौल) यह है कि यह क़यामत के दिन की तादाद है, यानी काफ़िरों पर हिसाब का दिन पचास हज़ार साल की तरह भारी होगा, किन्तु मोमिन के लिए दुनिया में एक फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ पढ़ने से भी संक्षिप्त (मुख़्तसर) होगा। (मुसनद अहमद ३।७५) इमाम इब्ने कसीर ने इसी क़ौल को प्राथमिकता (तरजीह) दी है, क्योंकि हदीसों से भी इसे ताईद (समर्थन) मिली है। जैसाकि एक हदीस में ज़कात (देयदान) न चुकाने वाले को क़यामत के दिन जो अज़ाब दिया जायेगा उसकी

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿5﴾

५. तो तू अच्छी तरह से सब्र कर।

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿6﴾

६. बेशक ये उस (अज़ाब) को दूर समझ रहे हैं।

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ﴿7﴾

७. और हम उसे क़रीब ही देखते हैं।

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿8﴾

८. जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जायेगा।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿9﴾

९. और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿10﴾

१०. और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा।

يُبَصَّرُونَهُمْ ۚ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿11﴾

११. (अगरचे) एक-दूसरे को दिखा दिये जायेंगे, पापी उस दिन के अज़ाब के बदले (फ़िदये) में अपने पुत्रों को देना चाहेगा।

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ﴿12﴾

१२. अपनी पत्नी को और अपने भाई को।

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ﴿13﴾

१३. और अपने परिवार को जो उसे पनाह देता था।

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ﴿14﴾

१४. और धरती के सभी लोगों को, ताकि यह उसे मुक्ति (नजात) दिला दे।

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿15﴾

१५. (लेकिन) कभी यह न होगा, बेशक वह शोले वाली (आग) है।

نَزَّاعَةً لِلشَّوَىٰ ﴿16﴾

१६. जो (मुँह और सिर की) खाल खींच लेने वाली है।

चर्चा करते हुए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

«حتّى يَحكُمَ اللهُ بَيْنَ عِبادِهِ في يومٍ كانَ مِقدارُهُ خَمسينَ ألفَ سَنَةٍ مِمّا تَعُدُّونَ»

"यहाँ तक कि अल्लाह अपने बन्दों के बीच फ़ैसला कर देगा, ऐसे दिन में जिसकी मुद्दत तुम्हारी गिनती के अनुसार पचास हज़ार साल होगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाबु इस्मे मानेइज़ ज़कात)

तَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ (17)

१७. वह हर उस इंसान को पुकारेगी जो पीछे हटता और मुंह मोड़ता है।

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ (18)

१८. और जमा करके संभाल रखता है।[1]

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا (19)

१९. बेशक इंसान बड़े कच्चे दिल वाला बनाया गया है।[2]

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا (20)

२०. जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो हड़बड़ा जाता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا (21)

२१. और जब सुख हासिल होता है तो कंजूसी करने लगता है।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ (22)

२२. लेकिन वह नमाज़ी।

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ (23)

२३. जो अपनी नमाज पर पाबंदी रखने वाले हैं।[3]

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ (24)

२४. और जिन के धन में मुक़र्रर हिस्सा है।

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ (25)

२५. माँगने वालों का भी और सवाल करने से बचने वालों का भी।

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ (26)

२६. और जो इंसाफ़ के दिन पर यक़ीन रखते हैं।

---

[1] यानी जो दुनिया में सच्चाई से पीठ फेरता और मुंह मोड़ता है और धन जमा करके ख़ज़ानों में सैंत-सैंत कर रखता था, उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता था न उस में से ज़कात (धर्मदान) निकालता था, अल्लाह तआला नरक को बोलने की ताक़त देगा और वह अपने मुंह से बोलेगी और ऐसे लोगों को पुकार कर कहेगी जिन के कर्मों के बदले नरक अनिवार्य (वाजिब) होगा।

[2] बड़ा लालची और बहुत रोने वाले को هَلُوعٌ (हलूअ) कहा जाता है, जिसे अनुवाद (तर्जुमा) में बड़े कच्चे दिल वाला कहा गया है, क्योंकि ऐसा इंसान ही कंजूस, लालची और बड़ा रोने चिल्लाने वाला होता है, आगे उसका गुण (सिफ़्त) बताया गया है।

[3] मतलब हैं पूरे मोमिन एकेश्वरवादी (मुवहिहद)। उन में उपर बयान की गई कमज़ोरी नहीं होती बल्कि इस के ख़िलाफ़ वह अच्छे गुणों (सिफ़्त) के रूप होते हैं, रोज़ नमाज पढ़ने का मतलब है वह नमाज़ में सुस्ती नहीं करते, वह हर नमाज़ उस के समय पर बड़ी पाबंदी से पढ़ते हैं, कोई काम उन्हें नमाज़ से नहीं रोकता और कोई दुनियावी फ़ायेदा उन्हें नमाज़ से विमुख (ग़ाफ़िल) नहीं करता।

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿27﴾

२७. और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿28﴾

२८. बेशक उन के रब का अज़ाब बेख़ौफ़ होने की बात नहीं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿29﴾

२९. और जो लोग अपने गुप्तांगों (शर्मगाहों) की (हराम से) हिफ़ाज़त करते हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿30﴾

३०. लेकिन उनकी पत्नियों और दासियों के बारे में जिन के वे मालिक हैं वे मलामत वाले (निन्दित) नहीं।[1]

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿31﴾

३१. अब जो कोई इस के सिवाय (रास्ता) ढूँढेगा, तो ऐसे लोग हद (सीमा) पार करने वाले होंगे।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿32﴾

३२. और जो अपनी अमानतों का और अपने वादे और प्रतिज्ञा (अहद) का ध्यान रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿33﴾

३३. और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और अडिग) रहते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿34﴾

३४. और जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा (हिफ़ाज़त) करते हैं।

اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿35﴾

३५. यही लोग जन्नत में इज़्ज़त (और सम्मान) वाले होंगे।

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿36﴾

३६. तो काफ़िरों को क्या हो गया है कि वे तेरी तरफ़ दौड़ते आते हैं।

[1] यानी इंसान की ख़्वाहिश की तकमील (तृप्ति) के लिए अल्लाह ने दो हलाल रास्ते रखे हैं, एक पत्नी, और दूसरा दासी। आज के दौर में दासी का मामला इस्लाम की बतलाई नीति (तदबीर) के मुताबिक़ लगभग ख़त्म हो गया है, फिर भी क़ानूनी तौर से उसे इसलिए ख़त्म नहीं किया गया है कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में यदि ऐसी हालत पैदा हो जाये तो इस से फ़ायेदा उठाया जा सकता है, जो भी हो ईमानवालों की एक विशेषता (फ़ज़ीलत) यह भी है कि ख़्वाहिश की तकमील को पूरा करने के लिए हराम रास्ता नहीं अपनाते।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ (37)

३७. दायें और बायें से गुट के गुट।[1]

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ (38)

३८. क्या उन में से हर एक की इच्छा यह है कि वे ऐशो-आराम वाले स्वर्ग में प्रवेश (दाख़िला) पा जायेंगे?

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ (39)

३९. (ऐसा) कभी न होगा, हम ने उन्हें उस (चीज़) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ (40)

४०. तो मुझे क़सम है पूर्वों और पश्चिमों[2] के रब की (कि) हम यक़ीनी तौर से क़ादिर हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ (41)

४१. इस पर कि उन के बदले में उन से अच्छे लोग ले आयें, और हम मजबूर नहीं हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ (42)

४२. तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें, जिस का उन से वादा किया जाता है।

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ (43)

४३. जिस दिन क़ब्रों से ये दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी थान (जगह) की तरफ तेज़ चाल से जा रहे हैं।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ (44)

४४. उन की आँखें झुकी हुई होंगी, उन पर अपमान (ज़िल्लत) छा रहा होगा, यह है वह दिन जिसका उन से वादा किया जाता था।

---

[1] यह नबी ﷺ के दौर के काफ़िरों की चर्चा है कि वह आप ﷺ की मजलिस (सभा) में दौड़े-दौड़े आते, लेकिन आप की बातें सुनकर अमल करने की जगह उनका मज़ाक करते और टोलियों में बँट जाते, और दावा यह करते कि अगर मुसलमान जन्नत में गये तो हम उन से पहले जन्नत में जायेंगे, अल्लाह ने आगामी आयत में उनके इस गुमान का खंडन (तरदीद) किया।

[2] हर दिन सूरज अलग-अलग जगह से निकलता है और अलग-अलग जगह में डूबता है। इस बिना पर पूरब भी बहुत हैं और पश्चिम भी उतने ही। विवरण (तफ़सील) के लिए सूरह साफ़्फ़ात ५ देखिये।

सूरतु नूह-७१

سُوْرَةُ نُوْحٍ

सूर: नूह मक्का में नाज़िल हुई और इस में अठाईस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

१. बेशक हम ने नूह (ﷺ) को उन के समुदाय (क़ौम) की ओर भेजा[1] कि अपनी क़ौम को डरा दो (और आगाह कर दो) इस से पहले कि उन के पास कष्टदायी (सख़्त) अज़ाब आ जाये।

قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ②

२. (नूह ﷺ ने) कहा कि हे मेरे समुदाय (क़ौम) के लोगो! मैं तुम्हें स्पष्ट (वाज़ेह) रूप से डराने वाला हूँ।

أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ③

३. कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो और मेरा कहना मानो।[2]

يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ④

४. तो वह तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक छोड़ देगा,[3] बेशक अल्लाह का वादा जब आ जाता है तो रुकता नहीं, काश! तुम्हें मालूम होता।

---

[1] हज़रत नूह महान ईशदूतों (रसूलों) में से है, सहीह मुस्लिम वग़ैरह की शफ़ाअत (अभिस्तावना) वाली हदीस में है कि यह पहले रसूल हैं, यह भी कहा जाता है कि उन्ही की क़ौम से शिर्क शुरू हुआ। अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी जाति के मार्गदर्शन (हिदायत) के लिए भेजा।

[2] यानी मैं तुम्हें जिन बातों का हुक्म दूँ, उस में मेरा अनुपालन (इताअत) करो, क्योंकि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल और उसका प्रतिनिधि (नुमाइन्दा) बनकर आया हूँ।

[3] इसका मतलब यह है कि ईमान लाने की हालत में तुम्हारी मौत की अवधि (मुद्दत) जो मुक़र्रर है, उसे टालकर तुम्हें ज़्यादा उम्र देगा और वह अज़ाब तुम से दूर कर देगा जो ईमान न लाने की हालत में तुम्हारा नसीब था। इस आयत से दलील (तर्क) निकालते हुए कहा गया है कि आज्ञापालन (इताअत), सदाचार (नेकी) और रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक से हक़ीक़त में उम्र बढ़ती है। हदीस में भी है «صِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيدُ فِي الْعُمُرِ» "रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक उम्र के बढ़ने की वजह है।" (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं टालने का मतलब बरकत है, ईमान से उम्र में बरकत होगी, ईमान नहीं लाओगे तो इस बरकत (शुभ) से वंचित (महरूम) रहोगे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ⑤

५. (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात-दिन तेरी तरफ़ बुलाया है।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاءِي إِلَّا فِرَارًا ⑥

६. लेकिन मेरे बुलाने से ये लोग भागने में और बढ़ते ही गये।[1]

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ⑦

७. और मैंने जब कभी उन्हें तेरे माफ़ कर देने के लिए बुलाया उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया[2] और अड़ गये और बड़ा अहंकार (तकब्बुर) किया।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ⑧

८. फिर मैं ने उन्हें ऊँची आवाज़ से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ⑨

९. और बेशक मैंने उन से खुल कर भी कहा और चुपके-चुपके भी।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ⑩

१०. और मैं ने कहा कि अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी करवा लो। (और क्षमा माँगो) बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है।

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ⑪

११. वह तुम पर आकाश को ख़ूब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।[3]

---

[1] यानी मेरी पुकार की वजह से यह ईमान से और ज़्यादा दूर हो गये हैं, जब कोई समुदाय (क़ौम) गुमराही के आख़िरी कगार पर पहुँच जाये तो उसकी यही हालत होती है, उसे जितना अल्लाह की तरफ़ बुलाओ वह उतना ही दूर भागता है।

[2] ताकि मेरा मुँह न देख सकें या अपने सिरों पर कपड़े डाल लिये ताकि मेरी बात न सुन सकें। यह उनकी तरफ़ से कड़ी दुश्मनी का और नसीहत से नफ़रत का प्रदर्शन (इज़्हार) है, कुछ कहते हैं कि अपने को कपड़ों से ढाँक लेने का मक़सद यह था कि पैग़म्बर (संदेष्टा) उनको पहचान न सके और उन्हें दावत क़ुबूल करने पर मजबूर न करे।

[3] कुछ विद्वानों (आलिमों) ने इसी आयत की वजह से इस्तिसक़ा (वर्षा के लिये) नमाज़ में सूरह नूह पढ़ने को अच्छा कहा है। रिवायत है कि हज़रत उमर ﷺ भी एक बार इस्तिसक़ा की नमाज़ के लिये मंच (मिम्बर) पर चढ़े तो केवल आयाते इस्तिग़फ़ार, (क्षमा-याचना वाली आयतें) पढ़ कर मिम्बर से उतर आये, और फ़रमाया कि मैंने वर्षा (बारिश) को वर्षा के उन रास्तों से माँगा है जो आकाशों में हैं, जिन से वर्षा धरती पर उतरती है। (इब्ने कसीर)

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنّٰتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهٰرًا ⑫

१२. और तुम्हें खूब माल और औलाद में बढ़ा देगा और तुम्हें बाग़ देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلّٰهِ وَقَارًا ⑬

१३. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की बरतरी पर यक़ीन नहीं करते।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ⑭

१४. हालांकि उस ने तुम्हें कई तरह से पैदा किया है।

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ⑮

१५. क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिये हैं।[1]

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ⑯

१६. और उनमें चाँद को खूब जगमगाता बनाया है और सूरज को रौशन चिराग़ बनाया है।

وَاللّٰهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ⑰

१७. और तुम को धरती से (एक ख़ास तरीक़े से) उगाया है[2] (और पैदा किया है)।

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ⑱

१८. फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जायेगा और (एक ख़ास तरीक़े से) फिर तुम्हें निकालेगा।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ⑲

१९. और तुम्हारे लिये धरती को अल्लाह (तआला) ने फ़र्श बनाया है।

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ⑳

२०. ताकि तुम उस के विस्तृत (कुशादा) रास्तों में चलो फिरो।[3]

---

[1] जो उस के सामर्थ्य (क़ुदरत) और कारीगरी के कमाल को ज़ाहिर करते और इस बात की तरफ़ इशारा करते हैं कि माबूद सिर्फ़ वही एक अल्लाह है।

[2] यानी तुम्हारे बाप आदम عليه السلام को जिन्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उस में अल्लाह ने आत्मा (रूह) फूंकी, या अगर सभी मानव जाति को संबोधित (मुख़ातिब) समझा जाये तो मतलब यह होगा कि तुम जिस वीर्य (मनी) से पैदा होते हो वह उसी रिज़्क़ से बनता है जो धरती से मिलता है इस बिना पर सभी की पैदाईश इसी धरती से साबित होती है।

[3] سُبُل बहुवचन (जमा) है سَبِيل का और فِجاج बहुवचन (जमा) है فَجّ (कुशादा रास्ता) का, यानी उस ने धरती पर बड़े-बड़े कुशादा रास्ता बना दिये हैं ताकि इंसान एक जगह से दूसरी जगह, एक नगर से दूसरे नगर और एक देश से दूसरे देश में जा सके, इसलिए यह रास्ता भी इंसान की कारोबारी और सामाजिक ज़रूरत है, जिस की व्यवस्था (तदबीर) करके अल्लाह ने इंसान पर एक बड़ा अनुग्रह (नेमत) किया है।

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿21﴾

२१. नूह (ﷺ) ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने मेरी नाफ़रमानी की और ऐसों का आज्ञापालन (इताअत) किया जिन के माल और औलाद ने उन को (बेशक) नुक़सान ही में बढ़ाया।

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿22﴾

२२. और उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।[1]

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿23﴾

२३. और उन्होंने कहा कि कभी अपने देवताओं को न छोड़ना और न वद्द, सुवाअ, यगूस, यऊक और नस्र को (छोड़ना)।[2]

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿24﴾

२४. और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया, (हे रब!) तू उन ज़ालिमों के भटकावे को और बढ़ा दे।

---

[1] यह धोखा और छल क्या था? कुछ ने कहा कि उनका कुछ लोगों को नूह ﷺ के क़त्ल करने पर उभारना था, कुछ कहते हैं कि माल और औलाद की वजह से जिस स्वार्थ (नफ़्स) के धोखे में वह ग्रस्त (मुब्तिला) हुए, यहाँ तक कि उन में से कुछ ने कहा कि अगर यह सच पर न होते तो इन को यह सुख-सुविधायें (ऐशो-आराम) क्यों हासिल होतीं? कुछ के ख़्याल में उन के सरदारों का यह कहना था कि तुम अपने देवताओं की उपासना (इबादत) न छोड़ना और कुछ के ख़्याल में उनका कुफ़्र (इंकार) ही बड़ा धोखा था।

[2] यह नूह ﷺ की क़ौम के "पाँच सदाचारी (नेक) आदमी" थे जिनकी वह इबादत करते थे, और उन की इतनी शुहरत हुई कि अरब में भी उन की पूजा-अर्चना होती रही, जैसे 'वद्द' दूमतुल जनदल (जगह) में क़बीला कल्ब का, 'सुवाअ' समुद्र तट के क़बीला हुज़ैल का, 'यगूस' सबा के क़रीब जुर्फ़ नाम की जगह में मुराद और बनू गुतैफ़ का। 'यऊक' हमदान क़बीले का और 'नस्र' हिम्यर जाति का क़बीला ज़ुल कलाअ का उपास्य (माबूद) रहा। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) यह पाँचों नूह की जाति के नेक लोगों के नाम थे, जब यह मर गये तो शैतान ने उन के श्रृद्धालुओं (अक़ीदतमंदों) से कहा कि उन के चित्र (फ़ोटो) बनाकर अपने घरों और दूकानों में रख लो ताकि वह याद रहें और उन का ध्यान कर के तुम भी नेक काम करते रहो, जब यह चित्र बनाकर रखने वाले मर गये तो उन के वंश को शैतान ने यह कहकर शिर्क में लिप्त (मुब्तिला) कर दिया कि तुम्हारे पूर्वज (बुज़ुर्ग) तो इनकी उपासना करते थे, जिन के चित्र तुम्हारे घरों में लटक रहे हैं, इसलिए उन्होंने उनकी पूजा शुरू कर दी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह नूह)

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿25﴾

२५. ये लोग अपने पापों की वजह से (पानी में) डुबो दिये गये और जहन्नम में पहुँचा दिये गये और अल्लाह के सिवाय उन्होंने अपना कोई मदद करने वाला न पाया।

وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿26﴾

२६. और नूह (ﷺ) ने कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर किसी काफ़िर को रहने-सहने वाला न छोड़ ![1]

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿27﴾

२७. अगर तू उन्हें छोड़ देगा तो बेशक ये तेरे दूसरे बंदों को भी भटका देंगे और ये कुकर्म (बुरे काम) करने वाले काफ़िरों ही को जन्म देंगे।

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿28﴾

२८. हे मेरे रब! तू मुझे और मेरे माता-पिता और जो भी ईमान लाकर मेरे घर में आये और सभी ईमानवाले मर्दों और सभी ईमानवाली औरतों को माफ़ कर दे और काफ़िरों को बर्बादी के अलावा दूसरी किसी बात में न बढ़ा।

सूरतुल जिन्न-७२

سُوْرَةُ الْجِنِّ

सूरः जिन्न मक्का में नाज़िल हुई और इस में अट्ठाईस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿1﴾

१. (हे मोहम्मद ﷺ) आप कह दें कि मुझे वह्यी (प्रकाशना) की गयी है कि जिन्नों के एक गिरोह ने (क़ुरआन) सुना,[2] और कहा कि हम ने अजीब क़ुरआन सुना है।

---

[1] यह शाप (बद्दुआ) उस वक़्त दिया जब ईशदूत (नबी) नूह ﷺ उन के ईमान लाने से बहुत मायूस हो गये और अल्लाह ने भी ख़बर कर दिया कि अब उन में से कोई ईमान नहीं लायेगा।

[2] यह घटना (वाक़िआ) सूरह अहक़ाफ़ २९ में गुज़र चुकी है कि नबी ﷺ वादिये नख़ला में सहाबा केराम को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे कि कुछ जिन्नों का वहाँ से गुज़र हुआ तो उन्होंने आप का क़ुरआन सुना, जिस से वे प्रभावित (मुतास्सिर) हुए। यहाँ बतलाया जा रहा है कि उस समय जिन्नों के क़ुरआन सुनने का ज्ञान (इल्म) आप को नहीं हुआ, बल्कि वह्यी के ज़रिये आप को इस से सूचित (बाख़बर) किया गया।

يَّهۡدِيۡۤ اِلَى الرُّشۡدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنۡ نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ﴿2﴾

२. जो सच्चे रास्ते की तरफ़ मार्गदर्शन (हिदायत) देता है हम तो उस पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी दूसरे को साझीदार न बनायेंगे।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿3﴾

३. और बेशक हमारे रब की शान बुलन्द है, न उस ने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है और न औलाद।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوۡلُ سَفِيۡهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿4﴾

४. और बेशक हम में का बेवकूफ़ अल्लाह के बारे में झूठी बातें कहता था।[1]

وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنۡ لَّنۡ تَقُوۡلَ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿5﴾

५. और हम तो यही समझते रहे कि नामुमकिन है कि इंसान और जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगायें।[2]

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الۡاِنۡسِ يَعُوۡذُوۡنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الۡجِنِّ فَزَادُوۡهُمۡ رَهَقًا ۙ﴿6﴾

६. हक़ीक़त यह है कि कुछ इंसान कुछ जिन्नों से पनाह माँगते थे,[3] जिस से जिन्नात अपनी उद्दण्डता (सरकशी) में और बढ़ गये।

وَّاَنَّهُمۡ ظَنُّوۡا كَمَا ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿7﴾

७. और (इंसानों) ने भी जिन्नों की तरह ये समझ लिया था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भेजेगा। (या किसी को दोबारा ज़िन्दा न करेगा)

---

[1] سَفِيۡهُنَا (हमारे बेवकूफ़) से मतलब कुछ ने शैतान लिया है, कुछ ने उनके साथी जिन्न और कुछ ने आम तौर से हर वह इंसान लिया है, जो यह ग़लत भ्रम (गुमान) रखता है कि अल्लाह की औलाद है। شَطَطًا के कई मायने किये गये हैं, ज़ुल्म, झूठ, बातिल और कुफ़्र में बढ़ा हुआ वग़ैरह। मक़सद दरमियानी रास्ता से दूरी और सीमा (हद) पार कर जाना है। मतलब यह है कि यह बात कि अल्लाह की औलाद है, उन बेवकूफ़ों की बात है जो दरमियानी और सीधे रास्ता से दूर, सीमा से परे, झूठ और इल्ज़ाम लगाने वाले हैं।

[2] इसलिए हम उसकी पुष्टि (तसदीक़) करते रहे और अल्लाह के बारे में यह आस्था (अक़ीदा) रखे रहे यहाँ तक कि हम ने क़ुरआन सुना तो फिर हम पर इस अक़ीदा का झूठा होना खुल गया।

[3] अज्ञानकाल (जाहिलियत) में एक प्रथा (रिवाज) यह भी थी कि वे कहीं यात्रा (सफ़र) पर जाते तो जिस वादी में रुकते वहाँ जिन्नों से पनाह माँगते, जैसे इलाके के सरदार और बड़े से पनाह माँगी जाती है। इस्लाम ने इस को ख़त्म किया और सिर्फ़ एक अल्लाह से पनाह माँगने पर ज़ोर दिया।

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ⑧

८. और हम ने आसमान को टटोल कर देखा तो उस को सख़्त चौकीदारों और तेज शोलों (ज्वालाओं) से भरा पाया।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ⑨

९. और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे, अब जो भी कान लगाता है वह एक शोले को अपनी ताक (घात) में पाता है।

وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ⑩

१०. और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब का इरादा उनके साथ भलाई का है।

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ⑪

११. और यह कि (बेशक) कुछ तो हम में से नेक हैं और कुछ उस के उल्टा भी हैं। हम कई तरह से बटे हुए हैं।[1]

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ⑫

१२. और हमें पूरा यक़ीन हो गया[2] कि हम अल्लाह तआला को धरती में कभी मजबूर नहीं कर सकते और न हम भाग कर उसे हरा सकते हैं।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ⑬

१३. और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, और जो भी अपने रब पर ईमान लायेगा उसे न किसी नुक़सान का डर है न ज़ुल्म (और दुख) का।

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ⑭

१४. और हम में से कुछ मुसलमान हैं और कुछ बेइंसाफ़ हैं,[3] तो जो मुसलमान हो गये उन्होंने सीधे रास्ते की खोज कर ली।

---

[1] قِدَدٌ (चीज के टुकड़े) صَارَ الْقَوْمُ قِدَدًا उस वक़्त बोलते हैं जब उनकी हालत एक-दूसरे से अलग हो, यानी हम कई समूहों (ग्रुपों) और कई ख़्यालों में बँटे हुए हैं, यानी जिन्नों में भी मुसलमान, काफ़िर, यहूदी, इसाई, मजूसी वग़ैरह हैं। कुछ कहते हैं कि उन में भी मुसलमानों की तरह क़दरिया, मुरजिया, राफ़िज़ा आदि (वग़ैरह) हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यहाँ ظَنّ यक़ीन के मायने में है, जैसे कि और भी कुछ जगहों पर है।

[3] यानी जो मोहम्मद (ﷺ) की नबूवत (दूतत्व) पर ईमान ले आये वह मुसलमान और जिन्होंने इंकार किया वह नाइंसाफ़ (अन्यायी) हैं।

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا (15)

१५. और जो ज़ालिम हैं वे नरक का ईंधन बन गये ।[1]

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَاهُم مَّاءً غَدَقًا (16)

१६. और यह कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर मजबूत रहते तो ज़रूर हम उन्हें बहुत ज़्यादा पानी पिलाते ।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا (17)

१७. ताकि हम उस में उन का इम्तेहान ले लें और जो इंसान अपने रब के स्मरण (ज़िक्र) से मुँह मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला) उसे कठोर अज़ाब में डाल देगा ।

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا (18)

१८. और यह कि मस्जिदें केवल अल्लाह ही के लिए (ख़ास) हैं, तो अल्लाह (तआला) के साथ किसी दूसरे को न पुकारो ।[2]

وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا (19)

१९. और जब अल्लाह का बंदा (भक्त) उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो क़रीब था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़ें ।[3]

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا (20)

२०. (आप) कह दीजिए कि मैं तो केवल अपने रब को ही पुकारता हूँ और उस के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता ।[4]

---

[1] इस से मालूम हुआ कि इंसानों की तरह जिन भी स्वर्ग और नरक में जायेंगे, उन में से काफ़िर नरक में और मुसलमान स्वर्ग में, यहाँ तक जिन्नों की बात पूरी हो गई । अब आगे फिर अल्लाह का क़ौल है ।

[2] مسجد का मतलब सज्दे की जगह है, सज्दा भी नमाज़ का एक रुक्न (स्तम्भ, फ़र्ज़ अमल) है इसीलिए नमाज़ पढ़ने की जगह को मस्जिद कहा जाता है, आयत का मतलब साफ़ है कि मस्जिदों का मक़सद सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत है, इसलिए मस्जिदों में किसी दूसरे की इबादत, किसी दूसरे से दुआ, फ़रियाद और किसी और से गुहार या उसे मदद के लिए पुकारना वैध (जायज़) नहीं । अगर यहाँ भी अल्लाह के सिवा किसी को पुकारा जाने लगे तो यह बहुत बुरा और बहुत ज़ुल्म होगा, लेकिन बदक़िस्मती से नाम के मुसलमान अब मस्जिदों में भी अल्लाह के साथ दूसरों को मदद के लिए पुकारते हैं, बल्कि मस्जिद में ऐसे शिला लेख (लौहे) लटकायें हुए हैं जिन में अल्लाह को छोड़कर दूसरों को मदद के लिए पुकारा गया है ।

[3] عَبْدُ الله (अल्लाह के दास) से मतलब रसूलुल्लाह ﷺ हैं, और मतलब यह है कि जिन्न और इंसान मिलकर चाहते हैं कि अल्लाह के इस प्रकाश (नूर) को अपनी फूँकों से बुझा दें, इस के दूसरे मायने भी बयान किये गये हैं लेकिन इमाम इब्ने कसीर ने इसे प्रधानता (फ़ज़ीलत) दी है ।

[4] यानी जब सभी आप की दुश्मनी पर एक मत हो गये और तुल गये हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ, उसी से पनाह माँगता और उसी पर भरोसा करता हूँ ।

قُلْ إِنِّي لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿21﴾

२१. कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी फ़ायदे-नुक़सान का अधिकार (हक़) नहीं ।[1]

قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿22﴾

२२. कह दीजिए कि मुझे कभी कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता और मैं कभी उस के सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता ।

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ﴿23﴾

२३. लेकिन (मेरा काम) तो केवल अल्लाह की बात और उसका सन्देश (लोगों को) पहुँचा देना है, (अब) जो भी अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा उस के लिए नरक की आग है जिस में ऐसे लोग हमेशा रहेंगे ।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ﴿24﴾

२४. यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उन को वादा दिया जाता है, तो क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में जान लेंगे कि किसका सहायक (मददगार) कमज़ोर और किसका गिरोह कम है।[2]

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ﴿25﴾

२५. (आप) कह दीजिए कि मुझे इल्म नहीं कि जिस का वादा तुम से किया जाता है वह क़रीब है या मेरा रब उस के लिए दूर की मुद्दत निर्धारित (मुक़र्रर) करेगा ।

عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ﴿26﴾

२६. वह ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब पर वह किसी को अवगत (बाख़बर) नहीं कराता ।

---

[1] यानी मुझे तुम्हारी हिदायत और गुमराही और फ़ायदे-नुक़सान का हक़ नही, मैं तो सिर्फ़ एक का बन्दा हूँ, जिसे अल्लाह ने प्रकाशना (वह्यी) और रिसालत के लिये चुन लिया है ।

[2] यानी उस वक़्त उनको पता लगेगा कि मुसलमानों का सहायक (मददगार) कमज़ोर है या मुशरिकों (बहुदेववादियों) का, और तौहीद वालों (एकेश्वरवादियों) की तादाद कम है या अल्लाह के अलावा के पुजारियों की? मतलब यह है कि मुशरिकों का तो सिरे से कोई मददगार ही नहीं होगा और अल्लाह की असंख्य (बेशुमार) सेना के आगे इन मुशरिकों की तादाद भी आटे में नमक के बराबर ही होगी ।

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ رَصَدًا ﴿27﴾

२७. सिवाय उस रसूल के जिसे वह पसंदीदा बना ले,[1] इसलिए कि उस के भी आगे-पीछे पहरेदार मुक़र्रर (निर्धारित) कर देता है।[2]

لِّيَعْلَمَ أَن قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَاتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿28﴾

२८. ताकि मालूम हो जाये कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिये,[3] अल्लाह (तआला) ने उन के क़रीबी चीज़ों को घेर रखा है और हर चीज़ की तादाद की गिनती कर रखी है।

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

सूरतुल मुज़्ज़म्मिल-७३

सूरः मुज़्ज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई और उस में बीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿1﴾

१. हे चादर में लिपटने वाले![4]

---

[1] यानी अपने पैग़म्बर (संदेष्टा) को कुछ परोक्ष (ग़ैब) की बातों से ख़बर कर देता है, जिस का तआल्लुक़ या तो संदेश पहुँचाने से होता है या उन के रसूल होने का सुबूत होते हैं, और खुली बात है कि अल्लाह के ख़बर करने से रसूल ग़ैब का जानने वाला नहीं हो सकता, क्योंकि अगर पैग़म्बर को भी ग़ैब का ज्ञान (इल्म) होता तो फिर अल्लाह की तरफ़ से उसे ग़ैब से बाख़बर करने का कोई मतलब ही नहीं रह जाता। अल्लाह तआला अपना ग़ैब उसी वक़्त अपने रसूल पर ज़ाहिर करता है जब उसे पहले से इस ग़ैब का इल्म नहीं होता, इसलिए ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है, जैसाकि यहाँ भी इसे साफ़ किया गया है।

[2] यानी वह्यी उतरने के समय पैग़म्बर के आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं जो जिन्नों और शैतानों को प्रकाशना (वह्यी) की बातें नहीं सुनने देते।

[3] لِيَعْلَمَ में ज़मीर किसकी तरफ़ फिरता है? कुछ के ख़्याल में रसूल ﷺ हैं, ताकि आप जान लें कि आप से पहले रसूलों ने भी अल्लाह का संदेश इसी तरह पहुँचाया जिस तरह आप ने पहुँचाया, या पहरेदार फ़रिश्तों ने अपने रब का पैग़ाम पैग़म्बर को पहुँचा दिया है। कुछ ने उसे अल्लाह की तरफ़ फिराया है, इस हालत में मतलब यह होगा कि अल्लाह अपने फ़रिश्तों के ज़रिये (द्वारा) अपने पैग़म्बरों की हिफ़ाज़त करता है ताकि वह रिसालत (संदेश पहुँचाने) के काम को अच्छी तरह से कर सकें, वह उस वह्यी की भी हिफ़ाज़त करता है जो पैग़म्बरों को भेजी जाती है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ाम लोगों तक सही-सही पहुँचा दिये हैं।

[4] जिस वक़्त इन आयतों का अवतरण (नुज़ूल) हुआ, नबी ﷺ चादर ओढ़ कर लेटे हुए थे, अल्लाह ने आप की इसी हालत की चर्चा करते हुए मुख़ातिब किया, मतलब यह है कि अब चादर छोड़ दें और रात में थोड़ा खड़े रहें यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें। कहा जाता है कि इस हुक्म के एतबार से आप ﷺ पर तहज्जुद की नमाज़ अनिवार्य (फ़र्ज़) थी। (इब्ने कसीर)

२. रातों को उठ खड़े हो जाओ, (तहज्जुद की नमाज के लिए) लेकिन थोड़ी देर।

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿2﴾

३. आधी रात या उस से भी कुछ कम।

نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿3﴾

४. या उस पर बढ़ा दे और क़ुरआन को ठहर-ठहर कर (साफ़) पढ़ा कर।

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿4﴾

५. बेशक हम तुझ पर बहुत भारी बात जल्द ही नाज़िल करेंगे।[1]

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿5﴾

६. बेशक रात का उठना मन की यकसूई (एकाग्रता) के लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत मुनासिब (उचित) करने वाला है।[2]

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿6﴾

७. बेशक तुझे दिन में बहुत से काम होते हैं।

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿7﴾

८. और तू अपने रब के नाम का ज़िक्र किया कर और सभी सृष्टि (मख़लूक़) से अलग होकर उसकी तरफ़ ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो जा।[3]

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿8﴾

---

[1] रात का (क़याम) खड़ा रहना चूँकि इन्सानी मन के लिए आम तौर पर कठिन है, इसलिए यह दरमियानी बात के रूप में कहा कि हम इस से भी भारी बात तुम पर नाज़िल करेंगे, यानी क़ुरआन। जिस के हुक्मों और कर्तव्यों (वाजिबात) पर कार्यरत (आमिल) होना, इसकी हदों की पाबंदी और उसका प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग़) एक भारी और मुश्किल काम है। कुछ ने बोझ (भारीपन) से वह बोझ मलतब लिया है जो वह्यी के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ पर पड़ता था, जिस की वजह से कड़े जाड़े में भी आप पसीने से भीग जाते थे। (इब्ने कसीर)

[2] दूसरा मायने यह है कि दिन के मुक़ाबले रात को क़ुरआन पढ़ना ज़्यादा साफ और मन के लगाव के लिए ज़्यादा प्रभावशाली (असरअंदाज़) है, इसलिए कि उस वक़्त दूसरी आवाज़ें नहीं होतीं, माहौल शान्त (ख़ामोश) होता है, उस वक़्त नमाज़ी जो पढ़ता है वह आवाज़ों, शोर और दुनिया के कामों की भेंट (नज़र) नहीं होता, बल्कि नमाज़ी उस से महफ़ूज़ रहता है और उस के असर को महसूस करता है।

[3] تَبَتُّلْ का मतलब कटना और अलग होना है, यानी अल्लाह की इबादत और उस से दुआ और विनय (सरगोशी) के लिए अकेला और पूरी तरह से उसकी तरफ़ ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो जा, यह रहबानियत (साधुत्व) से अलग चीज़ है, रहबानियत तो दुनियावी रिश्तों के छोड़ने और बैराग का नाम है। تَبَتُّلْ नाम है दुनियावी कामों के पूरा करने के बाद इबादत में लग जाना और अल्लाह से दुआ करना, जो इस्लाम में अच्छा है।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿9﴾

९. पूरब और पश्चिम का रब जिस के अलावा कोई पूज्य (इलाह) नहीं, तू उसी को अपना संरक्षक (वकील) बना ले।

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿10﴾

१०. और जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह और उन्हें अच्छी तरह से छोड़ रख।

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿11﴾

११. और मुझे और उन झुठलाने वाले नेमत वाले लोगों को छोड़ दे और उन्हें तनिक मौक़ा दे।

اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿12﴾

१२. बेशक हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगता हुआ नरक है।

وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿13﴾

१३. और गले में अटकने वाला खाना है और दर्द देने वाला अज़ाब है।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿14﴾

१४. जिस दिन धरती और पहाड़ थरथरा जायेंगे और पहाड़ भुरभुरी रेत के टीलों की तरह हो जायेंगे।

اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۥ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿15﴾

१५. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है, जैसा कि हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजा था।

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿16﴾

१६. तो फ़िरऔन ने उस रसूल की नाफ़रमानी की तो हम ने उसे घोर मुसीबत में पकड़ लिया।

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ﴿17﴾

१७. तुम अगर काफ़िर रहे तो उस दिन किस तरह बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा।[1]

[1] شِيبٌ (शीब) أَشْيَبُ (अशयब) का बहुवचन (जमा) है। क़यामत के दिन की भयानकता की वजह से हक़ीक़त में बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, या मिसाल के तौर पर ऐसा कहा।

हदीस में भी आता है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला आदम ﷺ से कहेगा कि अपनी औलाद में से जहन्नम के लिए अलग निकाल ले। हज़रत आदम कहेंगे कि हे अल्लाह! किस तरह? अल्लाह फ़रमायेगा कि हर हज़ार में से ९९९। इस वक़्त गर्भवती (हामला) औरतों के गर्भ गिर जायेंगे और बच्चे बूढ़े हो जायेंगे। (अलहदीस, अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल हज्ज)

१८. जिस दिन आकाश फट जायेगा, अल्लाह (तआला) का यह वादा पूरा होकर ही रहेगा।

السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿18﴾

१९. बेशक यह शिक्षा (नसीहत) है, तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ के रास्ते को अपना ले।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿19﴾

२०. बेशक तेरा रब अच्छी तरह जानता है कि तू और तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात को और आधी रात को और एक तिहाई रात को (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं,[1] और रात-दिन का पूरा अंदाज़ा अल्लाह (तआला) को ही है, वह (अच्छी तरह) जानता है कि तुम उसे हरगिज़ न निभा सकोगे तो उस ने तुम पर कृपा की, इसलिए जितना क़ुरआन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ दूसरे, धरती पर सैर करके अल्लाह तआला की कृपा (यानी रोज़ी भी) खोजेंगे और कुछ अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद भी करेंगे[2] तो तुम आसानी से जितना (क़ुरआन) पढ़ सकते हो पढ़ो, और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖؗ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

---

[1] जब सूरह के शुरू में आधी रात या उस से कम या ज़्यादा क़याम (नमाज़ के लिए खड़े होने) का हुक्म दिया गया तो आप और आप के साथियों का एक गिरोह रात में नमाज़ पढ़ने लगा, कभी दो तिहाई से कम, कभी आधी रात और कभी एक तिहाई रात जैसाकि यहाँ बयान है, लेकिन एक तो यह रात की लगातार नमाज़ बड़ी कठिन थी, दूसरे समय का यह अंदाज़ा आधी रात या तिहाई या दो तिहाई हिस्सा नमाज़ पढ़ना इस से भी बड़ा कठिन था, इसलिए अल्लाह ने इस आयत में हलका करने का हुक्म उतारा, जिसका मायने कुछ के ख़्याल में तहज्जुद की नमाज़ छोड़ने की इजाज़त है और कुछ के ख़्याल में यह है कि उसके फ़र्ज़ (अनिवार्य होने) को इस्तिहबाब (उत्तम होने) से बदल दिया गया, अब यह न आप के पैरोकारों के लिए फ़र्ज़ है न नबी ﷺ के लिए। कुछ का कहना है कि यह छूट केवल उम्मत के लिए है, नबी ﷺ के लिए इसका पढ़ना फ़र्ज़ था।

[2] इसी तरह जिहाद (धर्मयुद्ध) में भी कठिन यात्रायें (सफ़र) करनी पड़ती हैं, यह तीनों बातें रोग, यात्रा और जिहाद बारी-बारी सब के सामने आती हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने तहज्जुद में छूट दे दी है, क्योंकि इन में कठिनाईयाँ हैं।

وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿20﴾

और ज़कात (भी) देते रहा करो और अल्लाह तआला को अच्छा क़र्ज़ दो, और जो नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह (तआला) के यहाँ सब से अच्छे तरीक़े से बदले में ज़्यादा पाओगे ।[1] और अल्लाह तआला से माफ़ी माँगते रहो । बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला रहम करने वाला है ।

सूरतुल मुद्दस्सिर-७४

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ

सूर: मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई और इस में छप्पन आयतें और दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿1﴾

१. हे कपड़ा ओढ़ने वाले ।[2]

قُمْ فَأَنْذِرْ ﴿2﴾

२. खड़ा हो जा और होशियार कर दे ।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿3﴾

३. और अपने रब ही की महिमा (तकबीर) बयान कर ।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿4﴾

४. और अपने कपड़ों को पवित्र (पाक) रखा कर ।

[1] यानी नफ़िल नमाज़ें, सदक़ा, ख़ैरात और जो दूसरे नेक काम करोगे उसका अल्लाह के पास बेहतर बदला पाओगे । ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने इस सूर: के आधे हिस्से को मदनी और आधे हिस्से को मक्की माना है जिसकी वजह आयत न॰ २० है जो मदनी है ।

[2] सब से पहले जो वह्यी उतरी वह اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ है । उस के बाद वह्यी में देरी हो गई और नबी ﷺ बड़े बेचैन हो गये और परेशान रहने लगे । एक दिन अचानक वही फ़रिश्ता जो हिरा (पहाड़) की गुफ़ा में वह्यी लेकर पहली बार आया था, आप ﷺ ने देखा कि ज़मीन और आसमान के बीच एक कुर्सी पर बैठा है, जिस से आप पर एक डर छा गया और घर जाकर घर वालों से कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, इसलिए उन्होंने आप को एक कपड़ा ओढ़ा दिया, इसी हालत में यह वह्यी नाज़िल हुई । (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, सूरतुल मुद्दस्सिर और किताबुल ईमान) इस बिना पर यह दूसरी वह्यी (प्रकाशना) और वह्यी के देरी के बाद पहली वह्यी है ।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿5﴾

५. और अपवित्रता (नापाकी) को छोड़ दे ।[1]

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿6﴾

६. और एहसान करके ज़्यादा लेने की इच्छा (तमन्ना) न कर ।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿7﴾

७. और अपने रब के रास्ते में सब्र कर ।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ﴿8﴾

८. तो जब नरसिंघा (सूर) में फूँका जायेगा ।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ﴿9﴾

९. तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा ।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ﴿10﴾

१०. (जो) काफ़िरों पर आसान न होगा ।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿11﴾

११. मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है ।[2]

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ﴿12﴾

१२. और उसे बहुत धन दे रखा है ।

وَبَنِينَ شُهُودًا ﴿13﴾

१३. और हाज़िर रहने वाले पुत्र भी ।

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿14﴾

१४. और मैंने उसे बहुत कुछ कुशादगी दे रखी है ।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ﴿15﴾

१५. फिर भी उसकी तमन्ना (कामना) है कि मैं उसे और ज़्यादा दूं ।

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ﴿16﴾

१६. नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी (मुख़ालिफ़) है ।[3]

---

[1] यानी मूर्तियों की पूजा (इबादत) छोड़ दे, यह हक़ीक़त में लोगों को आप के माध्यम (ज़रिया) से हुक्म दिया जा रहा है ।

[2] यह शब्द चेतावनी (अलफ़ाज़ तम्बीह) और धमकी के लिए है कि उसे जिसे मैंने माँ के पेट से अकेला पैदा किया, उस के पास माल था न औलाद, और मुझे अकेला छोड़ दो, यानी मैं ख़ुद ही उस से निपट लूँगा । कहते हैं कि यह वलीद पुत्र मुग़ीरा की तरफ़ इशारा है, यह कुफ़्र और फ़साद में बहुत बढ़ा हुआ था, इसलिए ख़ास तौर से उसकी चर्चा की है ।

[3] यह كَلَّا की वजह है । عَنِيد उस इंसान को कहते हैं जो सच को जानते हुए उसका विरोध (मुख़ालफ़त) करे और उसका खण्डन (तरदीद) करे ।

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ﴿17﴾

१७. जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा।

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿18﴾

१८. उस ने सोंच करके अंदाज़ा किया।

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿19﴾

१९. उस का नाश हो! उस ने कैसे अंदाज़ा किया?

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿20﴾

२०. वह फिर नष्ट हो! किस तरह अंदाज़ा किया?[1]

ثُمَّ نَظَرَ ﴿21﴾

२१. उस ने फिर देखा।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿22﴾

२२. फिर मुंह सिकोड़ लिया और मुंह बना लिया।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿23﴾

२३. फिर पीछे हट गया और गर्व (घमंड) किया।

فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿24﴾

२४. और कहने लगा कि यह तो सिर्फ़ जादू है जो नक़ल किया जाता है।

إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿25﴾

२५. (यह) इंसान के क़ौल के अलावा कुछ भी नहीं।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿26﴾

२६. मैं जल्द ही उसे नरक में डालूंगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿27﴾

२७. और तुझे क्या पता[2] कि नरक (जहन्नम) क्या चीज़ है?

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿28﴾

२८. न वह बाक़ी रखती है और न छोड़ती है।

لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ﴿29﴾

२९. खाल को झुलसा देती है।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿30﴾

३०. और उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते तैनात) हैं।

[1] यह उस के बारे में बद्दुआ (अभिशाप) के लफ़्ज़ हैं कि नाश हो, मारा जाये, क्या बात उस ने सोची है?

[2] नरक के नामों और दर्जों में से एक का नाम «सक़र» भी है।

وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۗ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۗ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿31﴾

३१. और हम ने नरक के रक्षक (निगराँ) केवल फ़रिश्ते रखे हैं, और हम ने उनकी तादाद केवल काफ़िरों की परीक्षा के लिए निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखी है[1] ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जायें और अहले किताब और मुसलमान शक न करें, और जिन के दिल में रोग है वे और काफ़िर कहें कि इस मिसाल से अल्लाह तआला का क्या मुराद है?[2] इसी तरह अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है और तेरे रब की सेनाओं को उस के सिवाय कोई नहीं जानता,[3] यह सारे इंसानों के लिए (सरासर) नसीहत (और भलाई) है।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿32﴾

३२. हरगिज नहीं ![4] चाँद की क़सम।

وَالَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿33﴾

३३. और रात की जब वह पीछे हटे।

وَالصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ ﴿34﴾

३४. और सुबह की जब वह रौशन हो जाये।

---

[1] यह कुरैश के मूर्तिपूजकों का खंडन (तरदीद) है, जब नरक के अधिकारियों (निगराँ) की अल्लाह ने चर्चा की तो अबूजहल ने कुरैश के समूह को मुख़ातिब करते हुए कहा कि तुम मे हर दस इंसानों का गिरोह एक-एक फ़रिश्ते के लिए काफ़ी नहीं होगा। कुछ कहते हैं कि किलदा नाम के इंसान ने जिसे अपने बल पर बड़ा घमन्ड था, कहा कि तुम सभी सिर्फ़ दो फ़रिश्ते संभाल लेना, १७ फ़रिश्तों को तो मैं अकेला ही देख लूँगा। कहते हैं कि उसी ने रसूलुल्लाह ﷺ को कुश्ती की भी कई बार चुनौती दी और हर बार हारा लेकिन ईमान नहीं लाया।

[2] दिल के रोगी से मुराद मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं या फिर वह हैं जिन के दिलों में शक था, क्योंकि मक्का में मुनाफ़िक़ नहीं थे यानी यह पूछेंगे कि उनकी तादाद को यहाँ चर्चा करने में अल्लाह की क्या हिक्मत है?

[3] यानी यह काफ़िर और मुशरिक समझते हैं कि नरक में १९ फ़रिश्ते ही तो हैं, जिन पर क़ाबू पाना कौन सा बड़ा काम है? लेकिन उनको पता नहीं कि रब की सेना तो इतनी है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं, केवल फ़रिश्ते ही इतनी तादाद में हैं कि ७० हज़ार फ़रिश्ते रोज़ाना अल्लाह की उपासना (इबादत) के लिए "बैतुल मामूर" में दाख़िल होते हैं, फिर क़यामत तक उन की बारी नहीं आयेगी। (सहीह बुख़ारी और मुस्लिम)

[4] كَلَّا यह मक्कावासियों के गुमान का इंकार है, यानी जो वह यह समझते हैं कि हम फ़रिश्तों को हरा देंगे, कभी ऐसा न होगा, क़सम है चाँद की और रात की जब वह पीछे हटे यानी जाने लगे।

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿35﴾

३५. कि (बेशक वह जहन्नम) बड़ी चीज़ों में से एक है।

نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿36﴾

३६. इंसान को डराने वाली।

لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿37﴾

३७. उन इंसान के लिए जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿38﴾

३८. हर इंसान अपने अमलों के बदले गिरवी है।[1]

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴿39﴾

३९. लेकिन दायें हाथ वाले।

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿40﴾

४०. (कि) वे जन्नतों में (बैठे हुए) सवाल करते होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿41﴾

४१. पापियों (मुजरिमों) से।

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿42﴾

४२. तुम्हें जहन्नम में किस बात ने डाला।

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿43﴾

४३. वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ी न थे।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿44﴾

४४. न भूखों को खाना खिलाते थे।[2]

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ﴿45﴾

४५. और हम बेकार बात (इंकार) करने वालों के साथ बेकार बात में व्यस्त (मशगूल) रहा करते थे।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿46﴾

४६. और हम बदले के दिन को झुठलाते थे।

---

[1] رهن गिरवी रखने को कहते हैं, यानी हर इंसान अपने अमल का गिरवी है, वह अमल उसे अज़ाब से आज़ाद करा लेगा (अगर नेक होगा) या नष्ट (हलाक) कर देगा। (अगर बुरा होगा)

[2] नमाज़ अल्लाह के हक़ में से है और ग़रीबों का खिलाना बंदों के हक़ में से है। मतलब यह हुआ कि हम ने अल्लाह के हक़ पूरे किये न बंदों के।

حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ (47)

४७. यहां तक कि हमारी मौत आ गयी ![1]

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ (48)

४८. तो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश फ़ायेदा देने वाली न होगी ।[2]

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ (49)

४९. उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुंह मोड़ रहे हैं?

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ (50)

५०. जैसे कि वे भड़के हुए गधे हैं ।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ (51)

५१. जो शेर से भागे हों ।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً (52)

५२. बल्कि उन में से हर इंसान चाहता है कि उसे स्पष्ट (वाज़ेह) किताबें दी जायें ।

كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ (53)

५३. कभी ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि ये क़यामत (प्रलय) से बेख़ौफ़ हैं ।

كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ (54)

५४. कभी नहीं! यह (क़ुरआन) एक नसीहत है ।

فَمَنْ شَاۗءَ ذَكَرَهٗ (55)

५५. अब जो चाहे उससे नसीहत हासिल करे ।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ (56)

५६. और वे उस समय नसीहत हासिल करेंगे, जब अल्लाह तआला चाहे, वह इसी लायक़ है कि उससे डरें और इस लायक़ भी कि वह माफ़ करे ।

---

[1] يقين (निश्चित) का मायने मौत है, जैसे अल्लाह ने दूसरी जगह पर फ़रमाया :

(وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ)

"अपने रब की इबादत मौत के आने तक करते रहो ।" (अल-हिज्र : ९९)

[2] यानी जो उपरोक्त (मज़कूरा) बुराईयों में मस्त होगा उसे किसी की सिफ़ारिश भी फ़ायेदा नहीं पहुँचायेगी, क्योंकि वह कुफ़्र की वजह से सिफ़ारिश के हक़दार नहीं होंगे, सिफ़ारिश तो सिर्फ़ उन के लिए फ़ायदेमंद होगी जो ईमान की वजह से सिफ़ारिश के हक़दार होंगे, अल्लाह की तरफ़ से सिफ़ारिश की इजाज़त भी उन्ही के लिए मिलेगी न कि हर एक के लिए ।

सूरतुल क़ियाम:-७५

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ

सूर: क़ियाम: मक्का में नाजिल हुई और इस में चालीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿1﴾

१. मैं क़सम खाता हूं क़यामत (प्रलय) के दिन की।[1]

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿2﴾

२. और क़सम खाता हूं उस मन की जो धिक्कार (निन्दा) करने वाला हो।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿3﴾

३. क्या इंसान यह ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियां जमा करेंगे ही नहीं।[2]

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿4﴾

४. हां ज़रूर करेंगे, हम को सामर्थ्य (क़ुदरत) है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें।

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ﴿5﴾

५. बल्कि इंसान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़रमानी (और अवहेलना) करता जाये।

يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿6﴾

६. पूछता है कि क़यामत (प्रलय) का दिन कब आयेगा।

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿7﴾

७. तो जिस समय आंखें पत्थरा जायेंगी।

---

[1] لَآ اُقْسِمُ में لا ज़्यादा है जो अरबी की एक भापा-शैली (अंदाज़) है जैसे ﴿مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ﴾ (अल-आराफ़-१२) और ﴿لِئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ﴾ (अल-हदीद-२९) और दूसरी बहुत सी जगह पर है। कुछ कहते हैं कि क़सम से पहले काफ़िरों की बात का इंकार है, वे कहते थे कि मौत के बाद कोई जीवन नहीं। لا के द्वारा (ज़रिये) कहा गया कि जैसे तुम कहते हो बात ऐसी नहीं मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूं, क़यामत (प्रलय) के दिन की क़सम खाने से मक़सद उस के महत्व (अहमियत) और गंभीरता (संजीदगी) को स्पष्ट (वाज़ेह) करना है।

[2] यह क़सम का जवाब है। इंसान से मुराद यहां काफ़िर और नास्तिक इंसान है जो क़यामत (प्रलय) को नहीं मानता, उसकी सोंच ग़लत है। अल्लाह तआला यक़ीनी तौर पर इंसानों के अंश (अंग) को जमा करेगा, यहां हड्डियों की ख़ास तौर से चर्चा है इसलिए कि हड्डियां ही पैदाईश का असल ढांचा और क़ालिब (फ़र्मा) हैं।

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿8﴾

८. और चाँद प्रकाशहीन (बेनूर) हो जायेगा ।[1]

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿9﴾

९. और सूरज और चाँद इकट्ठा कर दिये जायेंगे ।[2]

يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿10﴾

१०. उस दिन इंसान कहेगा कि आज भागने की जगह कहाँ है?

كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿11﴾

११. नहीं-नहीं, कोई पनाह की जगह नहीं ।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿12﴾

१२. आज तो तेरे रब की तरफ़ ही ठिकाना है ।

يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿13﴾

१३. आज इंसान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से अवगत (ख़बर) कराया जायेगा ।

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿14﴾

१४. बल्कि इंसान ख़ुद अपने आप पर हुज्जत है ।[3]

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿15﴾

१५. यद्यपि (अगरचे) कितने ही बहाने पेश करे ।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿16﴾

१६. (हे नबी) आप क़ुरआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी ज़ुबान को न हिलायें ।[4]

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿17﴾

१७. उसको जमा करना और (आप के मुँह से) पढ़ाना हमारा फ़र्ज़ है ।[5]

---

[1] जब चाँद को गहन लगता है तो उस समय भी वह बेनूर हो जाता है, लेकिन यह चाँद गहन जो क़यामत की निशानियों में से है जब होगा तो उस के बाद उस में प्रकाश (नूर) नहीं आयेगा ।

[2] यानी बेनूर होने से मुराद है कि चाँद की तरह सूरज का भी नूर ख़त्म हो जायेगा ।

[3] यानी उस के अपने हाथ, पाँव, ज़ुबान और दूसरे अंग गवाही देंगे, यानी यह मायने है कि इंसान अपनी बुराई ख़ुद जानता है ।

[4] हज़रत जिब्रील जब वह्यी (प्रकाशना) लेकर आते तो नबी ﷺ भी उन के साथ जल्दी से पढ़ते जाते कि कहीं कोई शब्द भूल न जायें । अल्लाह ने आप को फ़रिश्ते के साथ-साथ इस तरह पढ़ने से रोक दिया । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल क़ियामः)

[5] यानी आप के सीने में उस को जमा कर देना और आप की ज़ुबान पर इसे जारी कर देना हमारी ज़िम्मेदारी है, ताकि उसका कोई हिस्सा आप के याद से न निकले और आप को न भूले ।

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ (18)

१८. (इसलिए) हम जब उसे पढ़ लें, तो आप उस के पढ़ने का अनुकरण (इत्तेबा) करें।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ (19)

१९. फिर उसको स्पष्ट (वाज़ेह) कर देना हमारा काम है।[1]

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ (20)

२०. नहीं-नहीं, तुम तो जल्द हासिल होने वाली (दुनिया) से मुहब्बत रखते हो।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ (21)

२१. और परलोक (आख़िरत) को छोड़ बैठे हो।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ (22)

२२. उस दिन बहुत से मुंह ताज़ा (और रौशन) होंगे।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ (23)

२३. अपने रब की तरफ़ देखते होंगे।[2]

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ (24)

२४. और कितने मुंह उस दिन (बदसूरत और) उदास होंगे।[3]

تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ (25)

२५. समझते होंगे कि उन के साथ कमर तोड़ देने वाला सुलूक किया जायेगा।

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ (26)

२६. नहीं-नहीं जब (जान) हंसुली तक पहुँच जायेंगे।[4]

[1] यानी उस के मुश्किल जगहों की तफ़सीर (व्याख्या), हलाल और हराम का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) हमारी ज़िम्मेदारी है, इसका वाज़ेह मायने यह है कि नबी ﷺ ने क़ुरआन के संक्षेपों (इख़्तेसार) का जो बयान, मुब्हमों (गूढ़ों) की तफ़सीर और उस के आम विषयों की जो ख़ुसूसियत बताई है, जिसे हदीस कहा जाता है, यह भी अल्लाह की तरफ़ से वह्यी और सुझाई बातें हैं इसलिए उन्हें भी क़ुरआन की तरह मानना ज़रूरी है।

[2] यह ईमानवालों के चेहरे होंगे जो अपने अच्छे नतीजे की वजह से शान्त, ख़ुश और रौशन होंगे, फिर अल्लाह की ज़ियारत से भी ख़ुश होंगे, जैसाकि सहीह हदीसों से साफ़ है और अहले सुन्नत का अक़ीदा है।

[3] यह काफ़िरों के चेहरे होंगे। باسرة बदले हुए, पीले, ग़म और फ़िक्र से काले और बदसूरत होंगे।

[4] تراقی यह ترقوة का बहुवचन (जमा) है, यह गरदन के क़रीब सीने और कंधे के बीच एक हड्डी है यानी जब मौत का पंजा तुम्हें अपनी जकड़ में ले लेगा।

وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿27﴾

२७. और कहा जायेगा कि कोई झाड़-फूंक करने वाला है।

وَظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿28﴾

२८. और उसने यक़ीन कर लिया कि यह जुदाई का समय है।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿29﴾

२९. और पिंडली से पिंडली लिपट जायेगी।[1]

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمَسَاقُ ﴿30﴾

३०. आज तेरे रब की तरफ़ चलना है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿31﴾

३१. तो उस ने न तो पुष्टि (तसदीक़) की न नमाज पढ़ी।[2]

وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿32﴾

३२. बल्कि झुठलाया और पलट गया।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿33﴾

३३. फिर अपने घरवालों की तरफ़ इतराता हुआ गया।[3]

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿34﴾

३४. अफ़सोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿35﴾

३५. फिर दुख है और ख़राबी है तेरे लिए।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿36﴾

३६. क्या इंसान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जायेगा।

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿37﴾

३७. क्या वह एक गाढ़े पानी की बूंद न था, जो टपकाया जाता है?

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿38﴾

३८. फिर वह ख़ून का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया।[4]

---

[1] इस से या तो मौत के वक़्त पिंडली का पिंडली से मिल जाना मुराद है या लगातार दुख। आम मुफ़स्सिरों (भाष्यकारों) ने दूसरा मायने लिया है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यानी इस इंसान ने अल्लाह, रसूल और क़ुरआन को न माना और न नमाज पढ़ी, यानी अल्लाह की इबादत नहीं की।

[3] يَتَمَطّٰى इतराता और अकड़ता हुआ।

[4] فَسَوّٰى यानी उसे ठीक-ठाक किया, उसको पूरा किया और उस में रूह फूंकी।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ﴿39﴾

३९. फिर उस से जोड़े यानी नर-मादा बनाये।

أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿40﴾

४०. क्या (अल्लाह तआला) इस (बात) पर क़ादिर नहीं कि मुर्दा को जिन्दा कर दे।[1]

سُورَةُ الْإِنْسَانِ

सूरतुल इंसान-७६

सूर: इंसान* मदीने में नाज़िल हुई और इस में इक्तीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَذْكُورًا ﴿1﴾

१. यक़ीनन ही इंसान पर ज़माने का एक वह वक़्त भी गुज़र चुका है जबकि वह कोई बयान करने लायक़ चीज़ न था।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿2﴾

२. बेशक हम ने इंसान को मिले जुले वीर्य (नुत्फ़े) से इम्तेहान के लिए पैदा किया, और उस को सुनने वाला देखने वाला बनाया।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴿3﴾

३. हम ने उसे रास्ता दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।[2]

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَ وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿4﴾

४. बेशक हम ने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कनी आग तैयार कर रखी है।

---

[1] यानी जो अल्लाह इंसानों को इस तरह कई हालतों से गुज़ार कर पैदा करता है क्या मरने के बाद उन्हें दोबारा जिन्दा करने पर समर्थ (क़ादिर) नहीं है ?

* इस के मक्की और मदनी होने में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है। आम आलिम (विद्वान) इसे मदनी मानते हैं, कुछ कहते हैं कि आख़िरी दस आयतें मक्की हैं बाक़ी मदनी हैं। (फ़तहुल क़दीर) रसूलुल्लाह ﷺ जुमअ: के दिन फ़ज्र की नमाज़ में الم تنزيل السجدة (अलिफ़• लाम• मीम तंज़ीलुस सज्दा) और सूरह इंसान (दहर) पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:) इस सूर: को सूर: दहर भी कहा जाता है।

[2] यानी ऊपर बयान की गई ताक़तों और सलाहियतों के अलावा हम ने ख़ुद भी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम, अपनी किताबों और सच का प्रचार (तब्लीग़) करने वालों के ज़रिये सच्चाई के रास्ते को साफ़ कर दिया है, अब यह उसकी पसन्द है कि अल्लाह के हुक्म की पैरवी करके शुक्रगुज़ार बन्दा बन जाये या नाफ़रमानी का रास्ता अपनाकर नाशुक्रा बन जाये।

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ⑤

५. बेशक सदाचारी (नेक) लोग उस प्याले से पियेंगे जिस में काफूर की मिलावट है।

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ⑥

६. जो एक स्रोत (चश्मा) है, जिस से अल्लाह के बंदे पियेंगे, उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहेंगे)

يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ⑦

७. जो मन्नत पूरी करते हैं[1] और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों तरफ फैल जाने वाली है।

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ⑧

८. और अल्लाह (तआला) की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं, ग़रीब, यतीम (अनाथ) और कैदियों को।

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ⑨

९. हम तो तुम्हें केवल अल्लाह (तआला) की खुशी के लिए खिलाते हैं, तुम से बदला चाहते हैं न शुक्रिया।

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ⑩

१०. बेशक हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो तंगी और कठोरता (सख़्ती) वाला होगा।

فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ⑪

११. तो उन्हें अल्लाह तआला ने उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी पहुँचायी।[2]

---

[1] यानी सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करते हैं, मन्नत भी मानते हैं तो सिर्फ अल्लाह के लिए, और फिर उसे पूरी करते हैं, इस से मालूम हुआ कि मन्नत पूरी करना भी ज़रूरी है, शर्त यह है कि नाफ़रमानी की न हो। जैसाकि हदीस में है कि जिस ने मन्नत मानी हो कि वह अल्लाह का आज्ञापालन (इताअत) करेगा तो उसका पालन करे और जिस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की मन्नत मानी हो तो वह अल्लाह की नाफ़रमानी न करे यानी उसे पूरी न करे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान, बाबुन नज़्रे फ़ित ताअते)

[2] ताज़गी चेहरों पर होगी और ख़ुशी दिलों में, जब इंसान का दिल ख़ुश होता है तो उस का चेहरा भी ख़ुशी से खिल जाता है। नबी ﷺ के बारे में आता है कि जब आप ﷺ ख़ुश होते तो आप का चेहरा ऐसे रौशन होता मानो चाँद का टुकड़ा है। (अलबुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ⑫

१२. और उन्हें उन के सब्र के बदले[1] जन्नत और रेशमी कपड़ा अता किये।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ⑬

१३. ये वहां तख़्तों (आसनों) पर तकिये लगाये हुए बैठेंगे, न वहां सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता।[2]

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ⑭

१४. और उन (स्वर्ग) के साये उन पर झुके होंगे और उन के (मेवे) और गुच्छे नीचे लटकाये हुए होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ⑮

१५. और उन पर चांदी के बर्तनों और उन गिलासों का दौर चलाया जायेगा जो शीशे के होंगे।

قَوَارِيْرَا۟ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ⑯

१६. शीशे भी चांदी के जिन को (पिलाने वालों ने) अंदाजा से नाप रखा होगा।

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ⑰

१७. और उन्हें वहां वे पेय पदार्थ (मशरूब) पिलाये जायेंगे जिन में सोंठ की मिलावट होगी।[3]

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ⑱

१८. जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ⑲

१९. और उन के चारों तरफ़ वे कम उम्र बच्चे घूमते-फिरते होंगे जो हमेशा रहने वाले हैं, जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वे बिखरे हुए (सच्चे) मोती हैं।

---

[1] सब्र का मतलब है दीन के रास्ते में जो तकलीफ़ आयें उन्हें ख़ुशी-ख़ुशी सहन करना, अल्लाह के रास्तों में मनोकांक्षा (तमन्ना) और ग़र्ज का छोड़कर और नाफ़रमानी से बचना।

[2] زَمْهَرِيْر कड़े जाड़े को कहते हैं, मुराद यह है कि वहां सदा एक ही ऋतु (मौसम) रहेगी, और वह है बसन्त ऋतु, न बहुत गर्मी न बहुत कड़ी सर्दी।

[3] زَنْجَبِيْل (सोंठ, सूखी अदरक) को कहते हैं। यह गर्म होती है, इस की मिलावट से एक मज़ेदार कड़ुवापन आ जाता है, इस के सिवा यह अरबों की पसंदीदा चीज है, इसलिए उनके क़हवे में भी अदरक की मिलावट होती है। मतलब है कि जन्नत में एक मदिरा वह होगी जो ठंडी होगी जिस में कपूर मिला होगा और दूसरी गर्म जिस में सूखी अदरक की मिलावट होगी।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿20﴾

२०. और तू वहाँ जिस तरफ़ भी नज़र डालेगा पूरी नेमत और अज़ीम मुल्क ही देखेगा।

عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿21﴾

२१. उन के (शरीर) पर हरे महीन और मोटे रेशमी कपड़े होंगे[1] और उन्हें चाँदी के कंगन का गहना पहनाया जायेगा और उन्हें उन का रब पाक और साफ शराब पिलायेगा।

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿22﴾

२२. (कहा जायेगा) कि यह है तुम्हारे अमलों का बदला और तुम्हारी कोशिश की तारीफ़ की गई।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ﴿23﴾

२३. बेशक हम ने तुझ पर धीरे-धीरे क़ुरआन नाज़िल किया है।[2]

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿24﴾

२४. तो तू अपने रब के हुक्म पर अटल रह और उन में से किसी पापी या नाशुक्रे का कहना न मान।[3]

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿25﴾

२५. और अपने रब के नाम का सुबह और शाम वर्णन (ज़िक्र) किया कर।[4]

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿26﴾

२६. और रात के समय उसके सामने सज्दे कर और बहुत रात तक उसकी महिमागान (तस्बीह) किया कर।[5]

---

[1] سُندُس (सुन्दुस) महीन रेशमी कपड़े और إِسْتَبْرَق (इस्तबरक़) मोटा रेशम।

[2] यानी एक ही बार न उतार कर ज़रूरत के ऐतबार से कई समयों में उतारा। इसका दूसरा मायने यह भी हो सकता है कि यह क़ुरआन हम ने उतारा है, यह तेरा अपना गढ़ा हुआ नहीं है, जैसाकि मुशरिकीन दावा करते हैं।

[3] यानी अगर यह तुझे अल्लाह के नाज़िल किये अहकाम से रोकें तो उनका कहना न मान, बल्कि धर्मप्रचार (दीन की तबलीग़) और शिक्षा-दीक्षा (वाज़-नसीहत) का काम जारी रख और अल्लाह पर भरोसा रख वह लोगों से तेरी हिफ़ाज़त करेगा।

[4] सुबह और शाम से मुराद है, हर समय में अल्लाह का स्मरण (ज़िक्र) कर, या सुबह से मुराद फ़ज्र की नमाज़ और शाम से अस्र की नमाज़ है।

[5] 'रात में सज्दा कर' से मुराद कुछ ने मग़रिब और इशा की नमाज़ें ली हैं और تسبيح (तस्बीह) का मायने है कि जो बातें अल्लाह के लायक़ नहीं उन से उसकी पाकी बयान कर। कुछ ने इस से रात की नफ़िल नमाज़ तहज्जुद लिया है। امر (अहकाम) यहाँ अच्छाई और बेहतर के लिए है।

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿27﴾

२७. बेशक ये लोग जल्द मिलने वाली (दुनिया) को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं।

نَحْنُ خَلَقْنَٰهُمْ وَشَدَدْنَآ أَسْرَهُمْ ۖ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ أَمْثَٰلَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿28﴾

२८. हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने ही उन के जोड़ (और बंधन) मजबूत किये, और हम जब चाहें उन के बदले उन जैसे दूसरों को बदल लायें।

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ﴿29﴾

२९. बेशक यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब का रास्ता हासिल कर ले।

وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿30﴾

३०. और तुम न चाहोगे लेकिन यह कि अल्लाह तआला ही चाहे।[1] बेशक अल्लाह तआला जानने वाला और हिक्मत वाला है।

يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَالظَّٰلِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿31﴾

३१. जिसे चाहे अपनी कृपा (रहमत) में शामिल कर ले, और पापियों (जालिमों) के लिए उस ने कष्टदायी अजाब तैयार कर रखी है।

सूरतुल मुर्सलात-७७

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

सूर: मुर्सलात* मक्का में नाजिल हुई, इस में पचास आयतें और दो रूकूअ हैं।

[1] यानी तुम में से कोई इस बात पर समर्थ (क़ादिर) नहीं कि वह ख़ुद को सीधे रास्ते पर लगा ले, अपने लिए कोई फ़ायेदा हासिल कर ले। हाँ, अगर अल्लाह चाहे तो ऐसा मुमकिन है, उस के चाहे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते। हाँ, सही इरादा पर वह बदला (प्रतिफल) जरूर देता है। «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى» "अमल इरादे से होते हैं, हर इंसान के लिए वह है जिस का वह इरादा करे।" (सहीह बुख़ारी, पहली हदीस)

* यह सूरह मक्की है, जैसाकि सहीहैन (बुख़ारी और मुस्लिम) में रिवायत है : हजरत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि हम मिना की एक गुफ़ा में थे कि आप पर सूरह मुर्सलात नाजिल हुई, आप उसे पढ़ रहे थे और मैं उसको आप से हासिल कर रहा था कि अचानक एक नाग आ गया, आप ﷺ ने फ़रमाया कि इसे मार दो, किन्तु वह तेजी से भाग गया। आप ने फ़रमाया कि तुम उस की बुराई से और वह तुम्हारी बुराई से बच गया। (बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल मुर्सलात, मुस्लिम, किताबु कतलिल हय्याते व ग़ैरहा) कभी-कभी रसूलुल्लाह ﷺ ने मग़रिब की नमाज में भी यह सूरह पढ़ी है। (बुख़ारी, किताबुल अजाने, बाबुल क़िराअते फ़िल मग़रिब, मुस्लिम, किताबुस सलाते, बाबुल क़िराअते फ़िस सुबहे)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿1﴾

१. दिल को मोहने वाली लगातार चलने वाली धीमी हवा की क़सम !

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿2﴾

२. फिर ज़ोर से झोंका देने वालियों की क़सम!

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿3﴾

३. और (बादल को) उभार कर फैलाने वालियों की क़सम !

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿4﴾

४. फिर सच-झूठ को अलग-अलग करने वाले।

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿5﴾

५. और वह्यी (प्रकाशना) लाने वाले फ़रिश्तों की क़सम!

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿6﴾

६. जो (वह्यी) इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिए होती है।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿7﴾

७. बेशक जिस चीज़ का तुम से वादा किया जाता है वह निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से होने वाली है।[1]

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿8﴾

८. तो जब तारे प्रकाशहीन (बेनूर) कर दिये जायेंगे।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿9﴾

९. और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जायेगा।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿10﴾

१०. और जब पहाड़ टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा दिये जायेंगे।[2]

---

[1] क़सम का मतलब जिसकी क़सम खाई जाये उसका महत्व (अहमियत) लोगों पर स्पष्ट (वाज़ेह) करना और उसकी सच्चाई को ज़ाहिर करना होता है। जिसकी क़सम ली जा रही है वह (या क़सम का जवाब) यह है कि तुम से क़यामत का जो वादा किया जा रहा है वह ज़रूर वाक़ेअ (घटित) होगी, यानी उस में शक करने की नहीं बल्कि उस के लिए तैयारी करने की ज़रूरत है, यह क़यामत कब आयेगी? आगे की आयतों में वाज़ेह किया जा रहा है।

[2] यानी उन्हें धरती से उखाड़कर कण-कण (ज़र्रा-ज़र्रा) कर दिया जायेगा और धरती पूरी तरह से साफ और बराबर हो जायेगी।

११. और जब रसूलों को मुक़र्रर वक़्त पर लाया जायेगा।

१२. किस दिन के लिए (उन्हें) ठहराया गया है?[1]

१३. फ़ैसले के दिन के लिए।

१४. और तुझे क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है?

१५. उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।[2]

१६. क्या हम ने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया?

१७. फिर हम उन के बाद पिछलों को लाये।[3]

१८. हम पापियों (मुजरिमों) के साथ इसी तरह करते हैं।

१९. उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत (विनाश) है।

२०. क्या हम ने तुम्हें तुच्छ (हक़ीर) पानी से (नुतफ़े से) पैदा नहीं किया।

२१. फिर हम ने उसे मज़बूत (और सुरक्षित) जगह में रखा।

وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ (11)

لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ (12)

لِيَوْمِ الْفَصْلِ (13)

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ (14)

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ (15)

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ (16)

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ (17)

كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ (18)

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ (19)

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ (20)

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ (21)

---

[1] यह सवाल बड़ाई और ताज्जुब के लिए है, यानी कैसे महान दिन के लिए, जिसकी सख़्ती और गंभीरता लोगों के लिए बड़ी ताज्जुब वाली होगी, इन पैग़म्बरों को जमा होने का वक़्त दिया गया है।

[2] यानी विनाश (हलाक) हो, कुछ कहते हैं कि وَيْل जहन्नम (नरक) की एक वादी का नाम है, यह आयत इस सूरह में बार-बार दुहराई गई है, इसलिए कि हर झुठलाने वाले का गुनाह दूसरे से अलग तरह का होगा और इसी हिसाब से अज़ाब भी कई तरह के होंगे, इस तबाही के कई प्रकार (क़िस्में) हैं, जिन्हें झुठलाने वालों के लिए अलग-अलग बयान किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

[3] यानी मक्का के काफ़िर और उन से सहमत लोग, जिन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को झुठलाया।

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿22﴾

२२. एक निर्धारित (मुक़र्रर) समय तक।

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ﴿23﴾

२३. फिर हम ने अंदाज़ा लगाया[1] तो हम क्या अच्छा अंदाज़ा लगाने वाले हैं।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿24﴾

२४. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿25﴾

२५. क्या हम ने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया?

أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿26﴾

२६. ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी।

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُم مَّاءً فُرَاتًا ﴿27﴾

२७. और हम ने उसमें ऊँचे (और भारी) पहाड़ बना दिये और तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿28﴾

२८. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

انطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿29﴾

२९. उस (जहन्नम) की तरफ़ जाओ जिसे तुम झुठलाते रहे थे।

انطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿30﴾

३०. चलो तीन शाखाओं वाले साये की तरफ़।

لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿31﴾

३१. जो हक़ीक़त में न छाया देने वाली है और न ज्वाला (शोले) से बचा सकती है।

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿32﴾

३२. बेशक (जहन्नम) चिंगारियाँ फेंकती है जो महल की तरह हैं।

كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿33﴾

३३. जैसे कि वे पीले ऊँट हैं।[2]

---

[1] यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में जिस्म (शरीर) की बनावट और बनावट का सहीह अंदाज़ा किया कि दोनों आँखों, दोनों कानों, दोनों हाथों और पाँवों के बीच कितनी दूरी रहनी चाहिए।

[2] صُفْرٌ यह أَصْفَرُ (पीला) का बहुवचन (जमा) है, किन्तु अरब में इसका इस्तेमाल काले के मायने में भी है। इस मायने के आधार पर मतलब यह है कि उसकी एक-एक चिंगारी इतनी बड़ी होगी जैसे महल या क़िला, फिर हर चिंगारी के इतने बड़े-बड़े टुकड़े हो जायेंगे जैसे ऊँट होते हैं।

३४. उस दिन झुठलाने वालों की दुर्गति (हलाकत) है।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ (34)

३५. आज (का दिन) वह दिन है कि ये बोल भी न सकेंगे।[1]

هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ (35)

३६. न उन्हें उज्ज (बहाना) करने की इजाजत दी जायेगी।[2]

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ (36)

३७. उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ (37)

३८. यह है फ़ैसले का दिन, हम ने तुम्हें और पहले के लोगों को (सब को) जमा कर लिया है।[3]

هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ (38)

३९. तो अगर तुम मुझ से कोई चाल चल सकते हो तो चल लो।

فَإِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ (39)

४०. दुख है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ (40)

४१. बेशक सदाचारी (मुत्तक़ी) लोग साये में होंगे और बहते हुए चश्मों (सोतों) में।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ (41)

४२. और उन फलों में जिनकी वे इच्छा (तमन्ना) करें।

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ (42)

---

[1] महशर में काफ़िरों की अलग-अलग हालतें होंगी, एक वक़्त वह होगा जब वे वहाँ भी झूठ बोलेंगे, फिर अल्लाह तआला उन के मुंह पर मुहर लगा देगा और उनके हाथ-पाँव गवाही देंगे, फिर जिस पल उनको नरक में ले जाया जा रहा होगा उस वक़्त बेचैनी और बेक़रारी की हालत में उन की ज़बानें गूँगी हो जायेंगी। कुछ कहते हैं कि बोलेंगे तो ज़रूर लेकिन उन के पास कोई तर्क (दलील) नहीं होगा, मानो उन्हें बात करनी ही नहीं आती, जैसे हम दुनिया में भी ऐसे इंसान के बारे में कहते हैं जिस के पास संतोषजनक (तसल्ली बख़्श) जवाब नहीं होता, वह तो हमारे आगे बोल ही नहीं सका।

[2] मतलब यह है कि उन के पास पेश करने के लिए कोई उचित तर्क (दलील) ही नहीं होगा जिसे वह पेश करके आज़ाद हो सकें।

[3] यह अल्लाह तआला बंदों को संबोधित (मुख़ातिब) करेगा कि हम ने तुम्हें अपने पूरी क़ुदरत से फ़ैसले करने के लिए एक ही मैदान में जमा कर लिया है।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿43﴾

४३. (हे जन्नत वालो!) खाओ-पिओ मजे से अपने किये हुए कर्मों (अमल) के बदले।

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِينَ ﴿44﴾

४४. बेशक हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।[1]

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿45﴾

४५. उस दिन झुठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿46﴾

४६. (हे झुठलाने वालो!) तुम (दुनिया में) थोड़ा सा खा-पी लो और फ़ायेदा उठा लो, बेशक तुम पापी हो।[2]

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿47﴾

४७. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿48﴾

४८. उन से जब कहा जाता है कि रूकूअ करो तो नहीं करते।[3]

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿49﴾

४९. उस दिन झुठलाने वालों का विनाश (हलाक़त) है।[4]

فَبِأَىِّ حَدِيثٍۭ بَعْدَهُۥ يُؤْمِنُونَ ﴿50﴾

५०. अब इस (क़ुरआन) के बाद किस बात पर ईमान लायेंगे?[5]

---

[1] इस में भी इस बात का प्रलोभन (तरग़ीब) और निर्देश (हिदायत) है कि अगर आख़िरत (परलोक) में अच्छे नतीजे की इच्छा रखते हो तो दुनिया में नेकी (सत्कर्म) और भलाई का रास्ता अपनाओ।

[2] यह क़यामत के झुठलाने वालों को संबोधित (मुख़ातिब) किया गया है, तथा यह हुक्म धमकी और चेतावनी (तंबीह) के लिए है। अच्छा कुछ दिन मज़ा ले लो, तुम जैसे अपराधियों के लिए यातना (अज़ाब) का शिकंजा तैयार है।

[3] यानी उनको नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया जाता है तो नमाज़ नहीं पढ़ते।

[4] यानी उन के लिए जो अल्लाह तआला के हुक्मों, आज्ञा (इजाज़त) और निषेधों (मना) को नहीं मानते।

[5] यानी जब इस क़ुरआन पर यक़ीन नहीं करेंगे तो इस के बाद कौन सी वाणी है जिस पर ईमान लायेंगे? यहाँ भी "हदीस" क़ुरआन को कहा गया है।